तत् त्वं पूषन् अपावृणु
केन्द्रीय विद्यालय संगठन

केन्द्रीय विद्यालय मुज़फ़्फ़रनगर
विद्यालय ई-पत्रिका
सत्र 2022-23

Ph No.: 0131-2620297
E-mail Id: kvmzn6@gmail.com
Website: muzaffarnagar.kvs.ac.in

संपादक मण्डल

मुख्य संरक्षक

श्री शेक ताजुद्दीन

उपायुक्त,

के.वि.सं. , आगरा संभाग

संरक्षक

श्री ब्रिजेशपाल सिंह

प्राचार्य , के.वि. मुज़फ्फरनगर

प्रधान संपादक

ओम प्रकाश

स्नातकोत्तर शिक्षक

संपादक

1. श्री आदेश कुमार , स्नातकोत्तर शि.
2. श्रीमती शिखा, प्र.स्ना. शि.
3. श्रीमती भावना शर्मा , प्र.स्ना. शि.
4. श्रीमती भारती कोली, प्र.स्ना. शि.
5. सुश्री निधि, प्राथमिक शि.
6. श्रीमती वैशाली, संविदा शि.

विद्यार्थी संपादक

1. कु. वैष्णवी 12 'अ'
2. कु. पलक वर्मा 12 'स'
3. कु. पायल 11 'अ'
4. कु. वंशिका त्यागी 11 'ब'

साज सज्जा एवं कवर

श्री दुष्यन्त कुमार

अरविन्द मल्लप्पा बंगारी आई. ए. एस.

जिला मजिस्ट्रेट
एवं
अध्यक्ष विद्यालय प्रबंधन समिति
केन्द्रीय विद्यालय, मुज़फ़्फ़रनगर

संदेश.....

विद्यालय वह पावन स्थल है, जहाँ देश का भविष्य सजता-सँवरता है ।

वास्तव में शिक्षा का उद्देश्य छात्र-छात्राओं का शारीरिक एवं मानिसक विकास करते हुए, समाज का संवेदनशील नागरिक बनाना है। यह तभी संभव हो सकता है, जब उनको व्यक्तिगत एवं सामूहिक क्रियाकलापों में प्रतिभागिता हेतु अवसर दिया जाता है। मुझे बेहद प्रसन्नता है कि केन्द्रीय विद्यालय मुज़फ़्फ़रनगर वार्षिक ई-पत्रिका 'किसलय' के माध्याम से विद्यार्थियों में सृजन कौशल के विकास हेतु सक्रिय है। विद्यालय का यह प्रयास विद्यार्थियों को रचनानात्मकता की ओर ले जायेगा , जहाँ कविता, कहानी, निबंध, यात्रा साहित्य, अनुच्छेद लेखन एवं चित्रकला का सृजन होगा । विद्यालय ई-पत्रिका निश्चित रूप से विद्यार्थियों की अंतर्निहित योग्यताओं का प्रतिबिंब होगी।

विद्यालय के प्राचार्य, सभी शिक्षक-शिक्षिकाओं एवं शिक्षार्थियों को विद्यालय ई-पत्रिका के सफल प्रकाशन की असीम शुभकामनाएँ ।

स्वामी विवेकानंद जी के शब्दों में –

"उठो, जागो और तब तक मत रुको, जब तक लक्ष्य की प्राप्ति न हो जाए।"

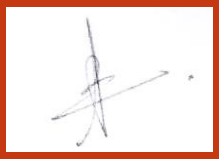

अरविन्द मल्लप्पा बंगारी (आई. ए. एस.)

जिला मजिस्ट्रेट
एवं
अध्यक्ष विद्यालय प्रबंधन समिति
केन्द्रीय विद्यालय, मुज़फ़्फ़रनगर

ब्रिजेशपाल सिंह
प्राचार्य
केन्द्रीय विद्यालय, मुज़फ़्फ़रनगर

संदेश.....

प्रसन्नता का विषय है कि सत्र 2022-23 की विद्यालय पत्रिका का ई- प्रकाशन करते हुए मैं स्वयं को गौरवान्वित अनुभव कर रहा हूं। यह पत्रिका बाल कलाकारों एवं शिक्षाविदों की भावनाओं, विचारों एवं अंतर्निहित क्षमताओं का साकार स्वरूप है। विद्यालय पत्रिका विद्यालय की शैक्षणिक एवं गैर-शैक्षणिक विभिन्न गतिविधियों का दर्पण होती है। विद्यार्थियों को अधिगम के समान अवसर उपलब्ध कराना एवं उनमें निहित योग्यताओं का विकास करने के लिए विद्यालय अनवरत प्रयत्नशील है। आज का विद्यार्थी आने वाले कल का आदर्श नागरिक है , राष्ट्र का गौरव है । अत: शिक्षार्थियों का सर्वांगींण विकास करना हमारा प्रथम कर्तव्य है।

विद्यालय पत्रिका का उद्देश्य शिक्षार्थियों की सृजनात्मक क्षमताओं एवं योग्यताओं को मंच उपलब्ध कराना है । प्रस्तुत पत्रिका में प्रकाशित बाल रचनाकारों की रचनाएं निश्चित रूप से हिन्दी, संस्कृत एवं अंग्रेजी साहित्य की विभिन्न विधाओं का रसपान कराने में सक्षम होंगी।

विद्यार्थियों की सृजनात्मक शक्ति संवेदन शीलता, कल्पना, एकता ,राष्ट्र प्रेम एवं विश्व बंधुत्व की भावना से समन्वित है। छात्र-छात्राओं की अप्रतिम प्रस्तुतियों गतिविधियों एवं कलाकृतियों को सभी सुधी पाठकों की सहज संवेदना स्वरूप स्नेह सुलभ होगा , ऐसा मेरा सहज विश्वास है।

विद्यालय ई- पत्रिका के प्रकाशन में जिन शिक्षक-शिक्षिकाओं, कर्मचारियों एवं विद्यार्थियों का प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से सहयोग रहा है, वे सभी साधुवाद के पात्र हैं। सभी शिक्षार्थियों को सुन्दर,सुखद,सफल एवं उज्ज्वल भविष्य की शुभकामनाएं ।

कबीरदास जी के शब्दों में –
"जिन खोजा तिन पाईया, गहरे पानी पैठ ।
मैं बौरा डूबन डरा, रहा किनारे बैठ ।।"

प्राचार्य/Principal
केन्द्रीय विद्यालय
Kendriya Vidyalaya
मुजफ्फरनगर (उ० प्र०)
Muzaffarnagar (U.P.)

बृजेशपाल सिंह
प्राचार्य

ओम प्रकाश गोस्वामी

स्नातकोत्तर शिक्षक (हिन्दी)

केन्द्रीय विद्यालय, मुज़फ़्फ़रनगर

संपादक की कलम से...

विद्यालय पत्रिका शिक्षण एवं शिक्षणेतर विद्यालयी क्रियाकलापों का प्रतिबिंब होती है, जिससे विद्यार्थियों की शारीरिक एवं मानसिक दक्षताओं का पता चलता है। विद्यालय पत्रिका के माध्यम से विद्यार्थियों की कल्पना शक्ति, सृजनात्मकता एवं संवेदनशीलता के भाव का विकास कर उनको समुचित दिशा प्रदान करते हुए समाज का आदर्श नागरिक बनाना है।

प्रस्तुत पत्रिका में विद्यार्थियों ने हिन्दी, संस्कृत एवं अंग्रेजी भाषा में साहित्य की विभिन्न विधाओं जैसे कि कहानी, कविता ,अनुच्छेद, यात्रा साहित्य, पर्यावरण परक लेख / रचना द्वारा रचनात्मकता का परिचय दिया है, जिनसे सहयोग, सम्मान, स्नेह, सत्य , स्वच्छता,पर्यावरण संरक्षण, एकता, अखंडता, करुणा, अहिंसा , भाईचारा एवं देश प्रेम की भावना का संदेश मिलता है।

मैं सुधी पाठकों से अनुरोध करना चाहूंगा कि रचनाओं को पढ़कर उनमें निहित संवेदनाओं को अंगीकार करते हुए त्रुटियों को नज़र अंदाज कर बाल कलाकारों को अपना शुभाशीष प्रदान करें।

अंत में, मैं प्राचार्य महोदय श्री ब्रिजेशपाल सिंह जी का हार्दिक साधुवाद करता हूं, जिनका समय-समय पर समुचित मार्गदर्शन प्राप्त होता रहा । मैं संपादक मंडल एवं सभी शिक्षक-शिक्षिकाओं का भी धन्यवाद ज्ञापन करता हूं ,जिनके अथक प्रयास से ई-पत्रिका प्रकाशन कार्य समय पर संभव हो सका।

सभी बाल कलाकारों का हार्दिक आभार एवं अभिनंदन ।

ओम प्रकाश गोस्वामी
स्नातकोत्तर शिक्षक
(हिन्दी)

विद्यालय के होनहार

AGRIEMA SHRIVASTAVA XII (SCIENCE)	PANTH UPADHYAY XII (SCIENCE)	ANMOL GAUTAM XII (SCIENCE)
96.0 %	93.2 %	91.4 %

NAINA DHIMAN XII (COMMERCE)	NATANSH GOEL XII (COMMERCE)	VAIDIK NAGWAN XII (COMMERCE)
90.6 %	86.4 %	84.0 %

HARSH KUMAR LATIYAN X	KANISHK CHHINDRA X	SAKSHAM BHARDWAJ X
93.0%	89.2 %	89.2 %

हिन्दी अनुभाग

माँ

माँ एक आशीर्वाद है , भगवान का दिया हुआ।
जो अपने बच्चों को , प्यार देती है बहुत ज्यादा।
माँ अपने बच्चों का पालन पोषण करती है। ,
वह बच्चों को , हर मुश्किल से बचाती है।
अपने हिस्से का निवाला भी बच्चों को दे देती है। ,
माँ अपने बच्चों को हर हाल में खुश देखना चाहती है। ,
खुद से ज्यादा बच्चों का सुख चाहती है। ,
वह अपने परिवार को हर मुसीबत से बचाना चाहती है।
इसलिए माँ जैसा दुनिया में कोई नहीं हो सकता है।
माँ तो माँ होती है बच्चों का संसार होती है।

अंशिका
कक्षा - 12'ब' (रमन सदन)

समय

चलते रहो समय के साथ,
रहोगे हमेशा जीत के पास।
पर इतना भी न व्यस्त रहो तुम,
समय निकालो अपनी खातिर।
बैठो अपने मित्रों के साथ,
घूमो फिरो मौज करो तुम ,
पर चलें हमेसा समय के साथ।
जो न समझे समय की कीमत,
उसको समय है खुद समझाता।
जो समझ गया समय की कीमत,
उसने सफल किया ये जीवन।
रात है तो सुबह भी आएगी,
ये समय तो चलता जाएगा।
न रुकेगा , न थमेगा,
ये तो बस चलता जाएगा।

छवि
कक्षा - 12'स' (टैगोर सदन)

के.वि. मुजफ्फरनगर

मेरे पापा

तुम चलो , तो मैं चलूँ।
धूप में छाँव हो तुम ,
मेरा हौसला हो तुम।
हो जो मुझे सबसे प्यारे,
तुम हो सबसे जुदा , सबसे न्यारे।
मेरी जमीं,मेरा आसमान हो तुम ,
रूँठ जाऊँ तो प्यार से मना लेते हो ,तुम।
जब होते हो मेरे आस, पास-
दिन हो या रात , हर पल हो जाता खास।

पलक वर्मा
कक्षा - 12'स' (टैगोर सदन)

वो स्कूल का पहला दिन

याद हमको आता है आज भी वो दिन,
स्कूल का हमारा वह ऐसा पहला दिन।
खुशी थी इतनी कि सोए नही रातभर-,
उठ गऐ जल्दी मम्मी पापा भी उस दिन।।

सुबह- सुबह की किरणें ये प्यारी प्यारी,
टनटन घंटी बजी- विद्यालय में हमारी।
दौड़ दौड़ कर बच्चे प्रार्थना स्थल आए
सामूहिक प्रार्थना हुई बच्चों की सारी।।

अनुशासन का महत्व गुरु ने समझाया,
कक्षा में बिठाकर व्यंजन ज्ञान कराया।
स्वर और गिनती हमें बोलकर सुनाया,
अनेंको अनुभवों का हमें ज्ञान कराया।।

वैष्णवी
कक्षा – 12 'अ' (शिवाजी सदन)

के.वि. मुजफ्फरनगर

तू अपनी ख़ूबियाँ ढूँढ़

कमिया निकालने के लिए लोग है ना...
अगर रखना है कदम तो आगे रख,
पीछे खींचने के लिए लोग हैं ना...
सपना देखना है तो ऊंचे देख
नीचा दिखाने के लिए लोग हैं ना...
तू अपने अंदर जुनून की चिंगारी भड़का
जलने के लिए लोग हैं ना...
प्यार करना है तो खुद से कर
नफ़रत करने के लिए लोग हैं ना...
तू अपनी अलग पहचान बना
भीड़ में चलने के लिए लोग हैं ना...
तू कुछ करके दिखा दुनिया को
कि तू कुछ करके दिखा दुनिया को...
तालियां बजाने के लिए लोग हैं ना..

हर्षित बैनिवाल
कक्षा – 12 'ब' (शिवाजी सदन)

यादें

मायूस चेहरे पर, मुस्कान ले आती हैं,
यादें भी कमाल हैं, फिर जिंदा कर जाती हैं।
बस चाहिए इन्हें, फुर्सत के दो पल ,
यादें भी कमाल हैं, दौड़ी चली आती हैं।
कभी खुशियाँ, तो कभी ग़म याद दिलाती हैं,
यादें भी कमाल हैं ,आंखें भिगा जाती हैं।
गुज़र जाता है दिन, बीते वक्त की गलियों में ,
यादें भी कमाल हैं, लम्हे चुरा ले जाती हैं।
बिखरे हुए मन को, एक नयी उम्मीद देकर,
आगे बढ़ने का, नया रास्ता दिखा जाती हैं।
ये यादें भी कभी,कभी- जीना सिखा जाती हैं !!

देवांशी
कक्षा - 12'ब' (अशोक सदन)

के.वि. मुज़फ़्फ़रनगर

मित्र

बचपन में तो नादान होते हैं, मन लगने पर ही मिलते हैं,
ना मिलने पर याद करते हैं, मिल जाए, तो मस्ती करते हैं ॥
दिल की बात, सब उनसे करते हैं, तुम्हारे दुःख देखकर, वो रोते हैं,
हमेशा तुम्हारे साथ चलते हैं, दिल का भार कुछ कम करते हैं ॥
जब मिलते हैं, हंस के मिलते हैं, दिल से यही तो, हमें स्नेह करते हैं,
सही गलत, यह ना पहचानते हैं, पर भेद दिलों के सब जानते हैं ॥
यह भाई से बढ़कर होते हैं, मां बाप के दूसरे बेटे होते हैं,
कुछ भी कह दो, न रूठते हैं, जीवन के पूरक होते हैं ॥
सच कहने से, संकोच ना करते हैं, परिवार के, अभिन्न अंग होते हैं,
नए मित्र तो, जुगनू की तरह होते हैं, पर पुराने तो, सच्चे मोती होते हैं ॥
किस्मत वालों को ही मिलते हैं, जीवन सहज सरल, करते हैं,
मुसीबत में मदद करते हैं, हताशा में भी, मुस्कान ला देते हैं ॥
गुस्से में भी, अपने होते हैं, दुख में, यह कंधे होते हैं,
तुम्हारी खुशी में यह तुमसे ज्यादा खुश होते हैं,
सही में यही तो शरीर के हृदय होते हैं ॥
नहीं है, जिनके पास उनसे पूछो, मित्र, आखिर क्या होते हैं ?
जिनके पास हैं वह कहेंगे, अच्छे मित्र, तो बहुत प्यारे होते हैं ॥

देवांशी

कक्षा 12 -'ब' (अशोक सदन)

शिक्षक दिवस

हर साल हम 5 सितंबर को शिक्षक दिवस मनाते हैं। शिक्षक हमें न सिर्फ ज्ञान का प्रकाश देते हैं बल्कि अच्छे बुरे की पहचान करने की शिक्षा प्रदान करते है। हमारे मन के अन्धकार को भी दूर करते हैं। किसी भी राष्ट्र के निर्माण और उसकी संस्कृति की रक्षा करने में भी शिक्षक एक अहम भूमिका निभाते हैं।

इस दिन भारत के प्रथम उपराष्ट्रपति बुद्धिजीवी सर्वपल्ली डॉ राधाकृष्णन का जन्म हुआ था। वह स्वयं इस . देश के एक महान शिक्षक थे। शिक्षक की उपासना सदियों पहले गुरुकुल सेचली आ रही है।

शिक्षक समाज का निर्माता होता है। इनकी तुलना देवता से भी की जा सकती है, जो हमेशा ही मानव कल्याण में लगे रहते थे। इस अवसर पर देश भर में सबसे योग्य और शिक्षा के प्रति समर्पित शिक्षकों को केंद्र सरकार विशेष रूप से सम्मानित करती है। यह सम्मान पाकर शिक्षकों का मनोबल बढ़ता है।

नतांश गोयल

कक्षा 12 -'स'

कवि . मृत्युंजय

सामान्य ज्ञान

भारत के गृह मंत्री - अमित शाह जी
रेल मंत्री -श्री अश्वनी वैष्णव जी
नागरिक उड्डयन मंत्री -श्री ज्योतिरादित्य सिंधिया जी
सड़क परिवहन मंत्री -श्री नितिन गडकरी जी
विदेश मंत्री -डॉ एस जयशंकर जी
रक्षा मंत्री -श्री राजनाथ सिंह जी
वित्त मंत्री -श्रीमति निर्मला सीतारमण जी
मुख्य न्यायधीश - (सीजेआई)जस्टिस डीवाई चंद्र चूड़ जी
कृषि मंत्री -श्री नरेंद्र सिंह तोमर जी
कानून मंत्री -श्री अर्जुन राम मेघवाल जी
महिला - बाल विकास मंत्री/श्रीमती स्मृति ईरानी जी
जल शक्ति मंत्री -श्री गजेन्द्र सिंह शेखावत जी
भारत के राष्ट्रपति -श्रीमति द्रौपदी मुर्मू जी
प्रथम महिला राष्ट्रपति -श्रीमती प्रतिभा देवीसिंह पाटील जी
भारत के उपराष्ट्रपति -श्री जगदीप धनखड़ जी
राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकार -श्री अजीत डोभाल जी

अंकित मिश्रा
कक्षा 12 -'स'

मेरी मसूरी यात्रा

इस बार गर्मियों की छुट्टी में मैं अपने परिवार के साथ मसूरी घूमने गई। मसूरी को पहाड़ों की रानी भी कहा जाता है। मसूरी में घूमने की बहुत सारी जगह है। सबसे पहले हम माल रोड गए ,जहां बहुत बड़ी मार्केट थी। माल रोड की बात चौराहे पर गांधी जी की प्रतिमा देखी जहां चौराहे पर ऊपर से नीचे की ओर का नजारा बहुत अद्भुत था।, उसके बाद हम कंपनी गार्डन गए।
जहां तरह तरह के फूल देखें। झरना भी देखा और हम झूले में झूले। कई रंग के गुलाब के फूल देखें। उसके बाद हम झील पर गए वहां पर हमने नाव भी चलाई। झील में बहुत सारी बत्तख थी। वापसी पर हम भट्टा फॉल भी गए जहां पर हमने रोपवे ट्रॉली की भी यात्रा की और नीचे जाकर बहुत सारी चीजें देखी।
इस बार गर्मियों की छुट्टियां बहुत मजेदार रही। मैं दोबारा मसूरी जाना चाहूंगी।

उम्मेहानि
कक्षा - 6 'अ'

के.वि. मुज़फ़्फ़रनगर

प्रयास

क्यों तेरी आंखों में ये व्यथा का अंधेरा है?
तू पहला मानव तो नहीं जिसे दुखों ने घेरा है।
यही तो जीवन का सत्य है,
इसमें दुख आते नित्य है।
तू दुखरूपी कलश में छिपे,
सुख के अमूल्य मोती निकाल!
खुद तय कर अपने जीवन का हाल !
उनके मुख न ताक जिन्होंने ,जाना तुझे अमूल्य है,
यह तो समय बतलाएगा, कि तू स्वर्ण तुल्य है।
पर स्वर्ण सा बनने के लिए, जलना तेरा भाग्य है,
जिस भांती साधु की कला उसका तप और वैराग्य है।
तू शक्ति का भंडार है, इस क्षणिक दुख में न सिमट!
तू कर प्रतीक्षा समय की, लेने दे उसे करवट,
कि जब समय अनुकूल हो, पत्थर भी तब तिर जाते है,
सैंकड़ों पहरो में भी पथिक को, रास्ते मिल जाते है।
तू फल की चिंता न कर,
न कर किसी की सफलता से द्वेष,
तेरा कर्म, तेरा भाव ही होगा तेरे जीवन में शेष।
जो आज रास्ता न मिला, क्या कल भी न दिख पाएगा,
तू शील बन, तेरे समक्ष, न कोई भँवर टिक पाएगा।

नैना
कक्षा - 12'अ'

मेरा अभिमान है पिता

कभी अभिमान तो कभी स्वाभिमान है पिता,
कभी धरती तो कभी आसमान है पिता।
जन्म दिया है अगर माँ ने,
जानेगा जिससे जग वो पहचान है पिता।
कभी कंधे पे बिठा के मेला दिखाता है पिता,
कभी बनके घोड़ा घुमाता है पिता।
माँ अगर पैरों पर चलना सिखाती है,
पैरों पर खड़ा होना सिखाता है पिता।

रिधिमा चौधरी (दसवीं 'अ')

अनुशासन

ये हमारी प्रकृति हैं जो नियम सिखाती है,
कभी सोचो ! कि नियम से पृथ्वी न घूमती,
सोचो ! कि नियम से कभी हवा ना चलती,
अगर सूरज नियम से कभी ना उदय होता,
जीवन तब हमारा बिलकुल बेकार हो जाता,
बिना हवा, सूरज के जीवन हमारा खो जाता,
हमारी फसल भी कभी अच्छी ना होती,
कभी भी मिलती न हमें खाने को रोटी,
जिंदगी में हर काम करने के लिए नियम जरुरी है,
बिना नियम के काम करने से हर बात अधूरी है,
नियम ना मानने वाला कभी न कर पाता शासन,
नियम से काम करना ही होता है अनुशासन।
नियम से सोना, नियम से जागना,
हमारे शरीर को स्वस्थ बनाता है,
जो मानव अनुशासन से चलता है,
उसके भविष्य में हमेशा सफलता है,
बिना नियम के काम करने का कभी न करो अभिमान,
नियम से काम न करने वाला होता है परेशान,
जीवन दुखों से भर जाता है तब,
बिना नियम के काम को पूरे करने की करते हो आस जब,
अनुशासन जिंदगी जीना सिखाता है,
हर फरमाइश पूरी तरह पूरा करता है,
ज़िन्दगी में हमेशा सबसे ऊपर रहता है,
जो अपने जीवन को अनुशासित करता है,

वरदान शर्मा
कक्षा - 12'ब'

मेरी माँ

प्यारी प्यारी मेरी माँ, सारे जग से न्यारी माँ।
लोरी रोज सुनाती है, थपकी दे सुलाती है।
जब उतरे आँगन में धूप, प्यार से मुझे जगाती है।
देती चीजें सारी माँ, प्यारी प्यारी मेरी माँ।
उंगली पकड़ चलाती है, सुबह शाम- घुमाती है।
ममता भरे हुए हाथों से, खाना रोज खिलाती है।
देवी जैसी मेरी माँ, सारे जग से न्यारी माँ।
प्यारी प्यारी मेरी माँ, प्यारी प्यारी मेरी माँ।

पारस त्यागी – 6 'अ'

टाइगर ऑफ द्रास

कैप्टन अनुज नय्यर का जन्म अगस्त 28, .के .को दिल्ली में हुआ। उनके पिता एस 1975क नय्यर प्रोफेसर थे जबकि माता मीना नय्यर दिल्ली विश्वविद्यालय के पुस्तकालय में काम करती थीं। अनुज नय्यर बचपन से ही बहादुर थे। डर नाम की चीज तो उनमें थी ही नहीं। उनकी माता के अनुसार, वह स्कूल में भी लीड करता था। पढ़ाई के साथ खेल में भी वह आगे रहता था। उसे शुरू से सेना और गन को लेकर दिलचस्पी रही थी। उसके दादा भी सेना में थे, उनसे वह काफी जुड़ा हुआ था। एक हादसे को याद करते हुए वे बताती हैं कि एक बार अनुज को चोट लग गई थी। घाव गंभीर था, उसके शरीर में टांके लगे थे। तब अनुज ने एनेस्थीसिया का 22 इंजेक्शन लिए बिना ही ऑपरेशन करा लिया था। उसकी बहादुरी देखकर डॉक्टर भी अचंभित रह गए थे।

12वीं के बाद पहले ही प्रयास में अनुज नय्यर एनडीए के लिये चुन लिये थे। तब होटल मैनेजमेंट और नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ फैशन टेक्नोलॉजी में भी उनकी अच्छी रैंक आई थी, लेकिन उन्होंने भारतीय सेना को चुना। साल 1993 में उनकी ट्रेनिंग शुरू हुई और 1997 में उनको कमीशन मिला। दो साल बाद यानी में 1999 कारगिल की जंग छिड़ गई और अनुज को जंग के लिए बुलावा आ गया।

इंडियन मिलिट्री एकेडमी से ग्रेजुएट होने के बाद बटालियन जाट रेजिमेंट में जुनियर ऑफिसर के पद पर 17 कैप्टन अनुज नय्यर को कारगिल, जम्मू और कश्मीर में पोस्टिंग मिली। फिर समय आया कारगिल युद्ध का, जिसकी शुरूआत हुई में 1999 में। कैप्टन अनुज नय्यर की पोस्टिंग उस दौरान कारगिल में ही थी। 1999 पाकिस्तानियों की लगातार भारत के कारगिल में गतिविधियां बढ़ने लगी थीं। स्थिति के बिगड़ने की जानकारी मिलते ही भारत सरकार ने 'ऑपरेशन विजय' चलाया ताकि जल्द से जल्द पाकिस्तानियों को भारत की सीमा से खदेड़ा जा सके। कैप्टन अनुज नय्यर जो उस समय जाट रेजिमेंट के जुनियर कमांडर थे 17, सैनिकों के साथ कारगिल युद्ध क्षेत्र की ओर प्रस्थान के लिए आगे बढ़े। उन्हें प्वाइंट पर भारत का वापस 4875 पर कब्जा करना उसकी स्ट्रैटेजिक लोकेशन की वजह से सबसे 4875 कब्जा हासिल करना था। प्वाइंट महत्वपूर्ण था। जिस पर कब्जा करने के लिए विक्रम बत्रा को भी भेजा गया था। टाइगर हिल पर वापस भारत पर भारत का कब्जा हासिल करना जरूरी था। 4875 का कब्जा पूरी तरह से कायम करने के लिए प्वाइंट पर चार्ली कंपनी पर कब्जे का जिम्मा था। इस अभियान पर चार्ली कंपनी के कमांडर के घायल 4875 प्वाइंट होने के कारण इसकी कमांड विक्रम बत्रा और कैप्टन अनुज नय्यर के हाथ आई। इन्होंने टीम को दो हिस्सों में विभाजित किया और हमले की योजना की। प्वाइंट पाकिस्तानी घुसपैठियों के कई बंकर थे जिन्हें 4875 नष्ट करना अति आवश्यक था। कैप्टन अनुज नय्यर की टीम अभियान के लिए आगे बढ़ने लगी लेकिन लगातार पाकिस्तानी घुसपैठियों की तरफ से भारी गोलाबारी हो रही थी। जिसके लिए अनुज नय्यर की टीम ने काउंटर अटैक किया। उनके इस काउंटर अटैक ने पाकिस्तानियों को पीछे हटने पर मजबूर किया। अपने इस अटैक के दौरान अनुज नय्यर ने मशीनगन बंकरों को भी नष्ट 3 पाकिस्तानियों को मार गिराया और 9 बंकरो को सफलतापूर्वक तबाह कर दिया 3 में से 4 किया। उनकी टीम ने, लेकिन 4 नंबर बंकर को नष्ट करने के दौरान दुश्मनों की तरफ से दागे गए ग्रेनेड से कैप्टन अनुज नय्यर को टक्कर लगी। गंभीर रूप से घायल होने के बाद भी उन्होंने अपनी बची हुई टीम के साथ हमला जारी रखा। उनकी टीम का कोई सदस्य इस अभियान में नहीं बच पाया और कैप्टन अनुज नय्यर भी वीरगती को प्राप्त हुए। लेकिन दो दिन बाद ही प्वाइंट पर चार्ली कंपनी की विक्रम बत्रा के नेतृत्व वाली टीम ने भारत का वापस कब्जा हासिल किया। 4875

कैप्टन अनुज नय्यर के प्वाइंट पर भारत के वापस कब्जे के अभूतपूर्व योगदान को भारत कभी नहीं 4875 साल की उम्र मे 24 भूला पाएगा। कैप्टन अनुज नय्यर ने दुश्मनों के सामने अत्यधिक साहस और धैर्य का परिचय दिया, जिसे भारत नमन करता है। उनके इस योगदान के लिए भारत सरकार ने उन्हें 'महावीर चक्र' से सम्मानित किया।

कनिष्क चौधरी – 12 'अ'

19 ऊंटों की कहानी - 🐫

एक गाँव में एक व्यक्ति के पास 19 ऊंट थे। एक दिन उस व्यक्ति की मृत्यु हो गयी। मृत्यु के पश्चात वसीयत पढ़ी गयी। जिसमें लिखा था कि मेरे 19 ऊंटों में से आधे मेरे बेटे को,19 ऊंटों में से एक चौथाई मेरी बेटी को, और 19 ऊंटों में से पांचवाँ हिस्सा मेरे नौकर को दे दिए जाएँ। सब लोग चक्कर में पड़ गए कि ये बँटवारा कैसे हो ?
19 ऊंटों का आधा अर्थात एक ऊँट काटना पड़ेगा, फिर तो ऊँट ही मर जायेगा। चलो एक को काट दिया तो बचे 18, उनका एक चौथाई साढ़े चार - साढ़े चार, फिर?
सब बड़ी उलझन में थे। फिर पड़ोस के गांव से एक बुद्धिमान व्यक्ति को बुलाया गया। वह बुद्धिमान व्यक्ति अपने ऊँट पर चढ़ कर आया, समस्या सुनी, थोड़ा दिमाग लगाया, फिर बोला इन 19 ऊंटों में मेरा भी ऊँट मिलाकर बाँट दो।
सबने सोचा कि एक तो मरने वाला पागल था, जो ऐसी वसीयत कर के चला गया, और अब ये दूसरा पागल आ गया जो बोलता है कि उनमें मेरा भी ऊँट मिलाकर बाँट दो। फिर भी सब ने सोचा बात मान लेने में क्या हर्ज है।
19+1=20 हुए।
20 का आधा 10, बेटे को दे दिए।
20 का चौथाई 5, बेटी को दे दिए।
20 का पांचवाँ हिस्सा 4, नौकर को दे दिए।
10+5+4=19 ऊँट
बच गया एक ऊँट, जो बुद्धिमान व्यक्ति का था |वो उसे लेकर अपने गाँव लौट गया। इस तरह 1 ऊँट मिलाने से, बाकी 19 ऊँटों का बंटवारा सुख, शांति, संतोष व आनंद से हो गया। हम सब के जीवन में भी 19 ऊंट होते हैं। 5 ज्ञानेंद्रियाँ (आँख, नाक, जीभ, कान, त्वचा(, 5 कर्मेन्द्रियाँ (हाथ, पैर, मुख, मूत्र द्वार, मलद्वार(, 5 प्राण (प्राण, अपान, समान, व्यान, उदान(और 4 अंतः करण (मन, बुद्धि, चित्त, अहंकार(मिलाकर कुल 19 ऊँट होते हैं। सारा जीवन मनुष्य इन्हीं 19 ऊँटों के बँटवारे में उलझा रहता है और जब तक उसमें मित्र रूपी ऊँट नहीं मिलाया जाता, यानी के दोस्तों के साथ, सगेसंबंधियों के साथ जीवन नहीं जिया जाता-, तब तक सुख, शांति, संतोष व आनंद की प्राप्ति नहीं हो सकती।

स्वस्ति
कक्षा 12 -'ब'

वीर सपूत विक्रम बत्रा

जब तूने देखा तेरी भारत मां पर आया खतरा, जान अपनी दांव पर लगा दी,
वीर सपूत तू विक्रम बत्रा।, तू है देश का वीर सिपाही,
तूने सीने पर गोली खाई।
देश की आन बचाने को है, तूने अमर गति पाई है।
भारत मां का लाल है तू, वीर सपूत तू विक्रम बत्रा।
शेरशाह कहलाता था तू, मन का थोड़ा मौजी था।
देश भक्ति के भाव से भरा, तू ही था एक सच्चा फौजी।

धैर्य शर्मा
कक्षा - 6 'अ'

गुमनाम वीर सिपाही सेनानी -

हमारे देश को आजाद हुए 75 साल हो चुके हैं, लेकिन आज हम किसी भी बच्चे से पूछे कि भारत को आजादी किसने दिलाई? सब का जवाब महात्मा गांधी होगा, हो भी क्यों ना, हर जगह गांधी जी का नाम ही तो है। लेकिन, क्या केवल गांधीजी ने ही देश को आजादी दिलाई। नहीं, केवल गांधी जी ने ही देश को आजादी नहीं दिलाई। उनके पीछे पीछे और भी लोगों ने उनका सहयोग किया। सुभाष चंद्र बोस, चंद्रशेखर आजाद, भगत सिंह, सुखदेव, राजगुरु, सरदार पटेल, बटुकेश्वर दत्त, मंगल पांडे, लाला लाजपत राय, लोकमान्य तिलक, गोविंद वल्लभ पंत, राम प्रसाद बिस्मिल, रास बिहारी बोस, रानी लक्ष्मीबाई जैसे ना जाने कितने स्वतंत्रता सेनानियों ने गुलामी की मजबूत दीवार पर वार कर कर के उसे कमजोर कर दिया। फिर कुछ स्वतंत्रता सेनानियों के संघर्ष की बदौलत वह दीवार ढह गई और तब जाकर हमें मिली। वह आजादी'आजादी', जिसके लिए न जाने कितनों ने अपना खून बहाया, कितनों ने अपना सर कटवाया, और कितनों ने फांसी के फंदे को फूलों की माला समझकर अपने गले में डाल लिया। न जाने कितने परिवार, कितने बच्चे अनाथ हो गए होंगे। क्या उन्होंने इसके बारे में सोचा। उनके जहन में केवल एक चीज थी और वो थी। इन गुमनाम लोगों'आजादी' – की बहादुरी पर किसी ने क्या खूब लिखा है

जो शहीदों को करना नमन छोड़ दे,
उसे जाकर यह कह दो, कि वह वतन छोड़ दे।
जिसको नहीं है इस मिट्टी से प्यार,
इस मिट्टी में होना वह दफन छोड़ दे।

क्या केवल कुछ लोगों की बदौलत हमें आजादी मिली? नहीं, इसके पीछे बहुत से गुमनाम सैनिक और स्वतंत्रता सेनानियों का योगदान है। साहित्यकारों, लेखकों और कवियों का भी इसमें विशेष योगदान है। कुछ ऐसे लोग थे, जिन्होंने हर समय केवल आजादी के बारे में सोचा। गांधीजी का दल हमेशा चुप रहा, अंग्रेज फायदा उठाते रहे। लेकिन इन गुमनाम लोगों के विद्रोह ने इन अंग्रेजों को हिला कर रख दिया। एक गुमनाम वकील से स्वतंत्र सेनानी बने वल्लभ भाई पटेल को की उपाधि किसानों ने दी थ 'सरदार'ी। ब्रिटिश हुकूमत में आईसीएस की नौकरी को लात मारने वाले सुभाष चंद्र बोस को नेताजी की उपाधि आम जनता ने दी थी।'

यह बात हमेशा से चली आ रही है कि इंसान नाम से नहीं कर्म से ऊंचा होता है, और यही सिद्ध कर दिखाया इन गुमनाम सिपाहियों ने। यह लोग नाम से जरूर छोटे थे, लेकिन आजादी में इनकी बहुत बड़ी भूमिका थी। लेकिन इनका नाम कोई नहीं जानता। अगर ये वीर गुमनाम सैनिक नहीं होते तो हम शायद आज भी गुलाम होते।

धन्यवाद।

विशेष मिश्रा
कक्षा - 9 'ब' (शिवाजी सदन)

माँ

माँ तो जन्नत का फूल है, प्यार करना उसका उसूल है,
दुनिया की मुहब्बत फ़िज़ूल है, माँ की हर दुआ कुबूल है,
ए इंसान माँ को नाराज़ करना.....
तेरी भूल है
माँ के कदमो की मिट्टी ,जन्नत की धूल है|

वंदिता राज - 8 'अ' (अशोका सदन)

विद्यालय में जाना सीखो

विद्यालय में जाना सीखो ,
गाने को गाना सीखो !
कपड़े ठीक से पहनना सीखो ,
ईमानदार तुम बनना सीखो !
सच्चा आदमी तुम बनना सीखो,
पानी को बचाना सीखो !
पेड़ों को लगाना सीखो,
गम को भुलाना सीखो !
खुशियों को बांटना सीखो,
सब को हँसाना सीखो !
बहती हुई नाव को पार लगाना सीखो,
हार को जीत में बदलना सीखो !
गलतियों को सुधारना सीखो ! !

आरुष कुमार
कक्षा – 10 'अ'

वो है मेरी माँ

मेरे सर्वस्व की पहचान,
अपने आँचल की दे छाँव !
ममता की वो लोरी गाती,
मेरे सपनों को सहलाती !
गाती रहती, मुस्कराती जो,
वो है मेरी माँ.....

प्यार समेटे सीने में जो,
सागर सारा अश्कों में जो !
हर आहट पर मुड़ आती जो,
वो है मेरी माँ.....

दुख मेरे को समेट ले जाती,
सुख की खुशबू बिखेर जाती !
ममता का रस बरसाती जो,
वो है मेरी माँ.....

रिधिमा चौधरी
कक्षा - दसवीं 'अ'

के.वि. मुजफ्फरनगर

समय

समय बहुत ही मूल्यवान है। हमें इसे नष्ट नहीं करना चाहिए, क्योंकि समय अगर एक बार चला गया तो वह फिर नहीं आएगा। हमें समय की कद्र करनी चाहिए। समय का सदुपयोग करना चाहिए। हम कई बार समय का दुरुपयोग करते हैं। जैसे कि मोबाईल में गेम खेलकर -, ज्यादा टी .वी. देखकर , फालतू की बातें करकर, खाली बैठकर आदि।

संस्कृत में कहा भी गया है कि समयेव करोति बलाबलम्" - ।"

अर्थात् समय ही व्यक्ति को कमजोर और बलवान बनाता है। समय का सदुपयोग करके ही ए.पी जे अब्दुल कलाम ने भारत के लिए. अच्छी मिसाइलें बनाई और मिसाइल मैन ऑफ इंडिया के नाम से प्रसिद्ध हुए। डॉक्टर- . भ ीमराव आम्बेडकर ने भारत के संविधान का सपना साकार किया। ये सभी समय का सदुपयोग करके ही प्रसिद्ध हो गए। जो लोग समय का सदुपयोग करते हैं, वह ही अपने जीवन में कुछ कर पाते हैं और उनका भविष्य उज्जवल होता है, उन्हें समाज में इज्जत मिलती है। और जो लोग समय का दुरुपयोग करते हैं, वह अपने जीवन में कुछ नहीं कर पाते और उनका भविष्य धूमिल होता है, उन्हें समाज में इज्जत नहीं मिलती।

कबीर दास जी ने क्या खूब लिखा है-

कालि करे सो आज कर", आज करै सो अब।
पल में परलय होएगी, बहुरि करेगा कब।।"

अनुपम गोस्वामी
कक्षा - 7 'अ' (अशोक सदन)

"माँ" मैं आज भी तेरी बच्ची हूँ

घुटनों से रेंगते-रेंगते,
कब पैरों पर खड़ी हुई,
तेरी ममता की छाँव में,
जाने कब बड़ी हुई,
काला-टीका दूध मलाई
आज भी सब कुछ वैसा है,
मैं ही मैं हूँ हर जगह,
माँ प्यार ये तेरा कैसा है?
सीधी-साधी, भोली-भाली,
मैं ही सबसे अच्छी हूँ,
कितनी भी हो जाऊ बड़ी,
"माँ!" मैं आज भी तेरी बच्ची हूँ|

रिधिमा चौधरी
कक्षा - दसवीं 'अ'

के.वि. मुज़फ्फ़रनगर

जिंदगी जीना सिखा रही थी

कल एक झलक जिंदगी को देखा,
वह राहों पर मेरी गुनगुना रही थी,
फिर ढूँढ उसे इधर उधर-,
वह आँख मिचोली कर मुस्कुरा रही थी,
एक अरसे के बाद आया मुझे करार,
वह सहला के मुझे सुला रही थी,
हम दोनों क्यों खफा है एक दूसरे से ,
मैं उसे और वह मुझे समझा रही थी,
मैंने पूछ लिया क्यों इतना दर्द दिया कमबख्त तूने,
वह हँसी और बोली –
मैं जिंदगी हूँ पगले, तुझे जीना सिखा रही थी।

अनन्या वर्मा
कक्षा – 6 'अ' (टैगोर सदन)

कविता

लेती नहीं दवाई 'माँ', जोड़े पाई पाई-'माँ'।
दुःख थे पर्वत, राई 'माँ', हारी नहीं लड़ाई 'माँ'।
इस दुनियां में सब मैले हैं, किस दुनियां से आई 'माँ'।
दुनिया के सब रिश्ते ठंडे, गरमागर्म रजाई 'माँ'।
जब भी कोई रिश्ता उधड़े, करती है तुरपाई 'माँ'।
बाबू जी तनख़ा लाये बस, लेकिन बरक़त लाई 'माँ'।
बाबूजी थे सख्त मगर, माखन और मलाई 'माँ'।
बाबूजी के पाँव दबा कर, सब तीरथ हो आई 'माँ'।
नाम सभी हैं गुड़ से मीठे, मां जी, मैया, माई, 'माँ'।
सभी साड़ियाँ छीज गई थीं, मगर नहीं कह पाई 'माँ'।
घर में चूल्हे मत बाँटो रे, देती रही दुहाई 'माँ'।
बाबूजी बीमार पड़े जब, साथ साथ मुरझाई-'माँ'।
रोती है लेकिन छुपछुप कर-, बड़े सब्र की जाई 'माँ'।
लड़तेलड़ते-, सहतेसहते-, रह गई एक तिहाई 'माँ'।
बेटी रहे ससुराल में खुश, सब ज़ेवर दे आई 'माँ'।
'माँ' से घर, घर लगता है, घर में घुली, समाई 'माँ'।
बेटे की कुर्सी है ऊँची, पर उसकी ऊँचाई 'माँ'।
दर्द बड़ा हो या छोटा हो, याद हमेशा आई 'माँ'।
घर के शगुन सभी 'माँ' से, है घर की शहनाई 'माँ'।
सभी पराये हो जाते हैं, होती नहीं पराई 'माँ'।

पायल राठी
कक्षा 9 -'ब' (अशोक सदन)

कहानी का नाम सच्चा दोस्त -

इस कहानी में हमें दो दोस्तों के बारे में बताया गया है , जिसमें से लखन अपने परिवार के साथ गाजियाबाद शहर में रहता था और वैभव भी गाजियाबाद शहर में रहता था। यह दोनों बचपन से दोस्त थे, और वे अब बड़े और समझदार हो गए थे। लखन जब छोटा था तो उसके पिता की मृत्यु हो गई थी, उसके परिवार में उसकी दादी , मम्मी और एक बहन थी। उसके पापा का बहुत बड़ा कारोबार था, जिसे अब लखन संभाला करता था। लखन शुरू से ही बहुत समझदार था, लखन का सबसे अच्छा दोस्त वैभव था।

वैभव अच्छे घर से था पर लखन जितना अमीर नहीं था। उन दोनों को लोग सगा भाई समझते थे, वैभव के पिता किसान थे, उसके परिवार में उसकी मम्मी,पापा,बड़ी बहन और छोटा भाई था। अपने पिता के काम में ही हाथ बढ़ाया करता था।

लखन की दादी ने उसका रिश्ता मेघना नाम की लड़की से पक्का कर दिया था। मेघना लखन के पापा के दोस्त की लड़की थी। लखन के पापा की इच्छा थी कि लखन की शादी बड़े होकर मेघना से हो, इसलिए लखन की दादी ने लखन का रिश्ता मेघना से कर दिया था। मेघना की मां उसे बचपन में छोड़कर भाग गई थी। इसलिए उसके पापा ने उसे बचपन से लाड प्यार से पाला था, उसके पापा उसकी हर जिद पूरी करते थे, इसलिए वह बचपन से ही बिगड़ चुकी थी, वह बड़ों को सम्मान नहीं देती थी, वह अपने पिता के सिवा किसी और की नहीं सुनती थी, वह लखन से शादी करने के लिए इसलिए तैयार हो गई क्योंकि लखन के पास बहुत पैसा था। सगाई से हफ्ते पहले लखन की कंपनी लॉस में चली गई थी ।, जिससे लखन का बहुत बड़ा नुकसान हुआ था और जब यह बात वैभव और मेघना को पता चली तो मेघना ने उससे शादी करने के लिए मना कर दिया और वैभव लखन को बिना बताए अपने गांव चला गया और जब लखन ने वैभव से बात करने की कोशिश की तो वैभव ने बात नहीं की और लखन को लगा वैभव उसे छोड़कर चला गया है।

लेकिन सच्चाई यह थी कि वैभव लखन को दुखी नहीं देख सकता था तो उसने अपने हिस्से की जमीन बेचकर लखन के नुकसान की भरपाई कर दी। जिससे लखन का कारोबार दोबारा शुरू हो गया और मेघना उसके पास दुबारा लौटाई पर लखन ने शादी के लिए मना कर दिया क्योंकि लखन को एहसास हो चुका था कि सच्चा मित्र ही आपके बुरे वक्त में साथ देता है।

इस कहानी से हमें यह शिक्षा मिलती है कि सच्चा मित्र हमें किसी भी परिस्थिति में छोड़कर नहीं जाता है।

तेजस्वी लाम्बा
कक्षा 8 'अ' (रमन सदन)

मज़ेदार पहेलियाँ

1) हाथ और चेहरा है, लेकिन ये कुछ भी पकड़ या मुस्कुरा नहीं सकता है?

2) एक पैर और बाकि धोती, सावन मे वह अक्सर रोती?

3) ऐसा क्या है जिसे हम देख सकते है लेकिन छू नहीं सकते?

4) ऐसी कौन सी चीज़ है जो खुद नही देख सकती लेकिन दूसरी को रास्ता दिखाती है?

5) वह क्या है जो रात में रोती और दिन में सोती है?

उत्तर: 1) घडी 2) छतरी 3) सपना 4) लाठी 5) मोमबत्ती

हुमैरा
कक्षा - 10 'ब'

मेरे प्यारे - प्यारे पापा

मेरे दिल मे रहते पापा
मेरी छोटी सी खुशी के लिए
सब कुछ सह जाते पापा,
पूरी करते हर मेरी इच्छा
उनके जैसा कोई ना अच्छा,
मम्मी मेरी जब भी डांटे,
मुझे दुलारते मेरे पापा
मेरे प्यारे - प्यारे पापा

हुज़्ज़त फातिमा
कक्षा – 9 'ब'

माँ

मेरी माँ, प्यारी माँ, मेरी माँ
जब हँसती है तू तो फूल है झड़ता
जब रूठ ती है तू मेरा दिल है मुझसे लड़ता.
जब मुझे नींद नहीं आती है तो,
तू मुझे अपने आँचल मे सुलाती,
अगर मैं उठ जाता तो फिरसे लोरी सुनाती,
तूने है मेरी हर शरारत को सहा,
पर सच बोलूँ तो सिर्फ तू है मेरा जहाँ
अगर झूठ बोलूँ तो सब कुछ है मेरे पास,
अगर सच बोलू तो सिर्फ तू है मेरे पास|

मुबस्सिर अहमद - 8 'अ'

कहानी- मौन की शक्ति

एक गांव में एक बुढ़िया रहती थी | वह बड़े ही झगड़ालू किस्म की थी| रोज किसी न किसी गाँव वाले से बिना किसी बात के झगड़ा करती थी| गांव वालों ने उसकी इस आदत से परेशान होकर एक दिन एक सभा बुलाई और यह निर्णय लिया गया कि बुढ़िया अब बारी बारी से एक घर को चुनेगी और उस दिन उससे ही लड़ेगी- जिसकी बारी आएगी| बुढ़िया ऐसे ही करने लगी एक बार गांव के प्रधान के बेटे की शादी थी घर में नई नई- दुल्हन आई थी, घर वाले सभी परेशान थे क्योंकि आज प्रधान के घर बुढ़िया लड़ने के लिए आने वाली थी| दुल्हन ने अपनी सास को परेशान देखा तो परेशानी का कारण पूछा| प्रधान की पत्नी ने उसे सारी बात बताई| दुल्हन ने कहा माँ जी घबराओ नहीं, जब बुढ़िया लड़ने के लिए आएगी तो मुझे बता देना| बुढ़िया अपने समय पर लड़ने के लिए आ गई और जोर से झगड़ा करने लगी| तभी दुल्हन ने लंबा सा घूँघट निकाला और घर की चौखट पर बैठ गई| जब बुढ़िया बोलबोल कर थक जाती तो दुल्हन उसे ठेंगा दिखा देती-| बुढ़िया फिर लड़ने लगती इस प्रकार बुढ़िया बोल बोल कर मर गई और गांव वालों को बुढ़िया से छुटकारा मिल गया और मौन- की शक्ति का पता चला|

लावण्या – 6 'अ'

चिड़िया की आशा

तिनका तिनका जोड़ कर, घरौंदा नया बनाया,
जिस डाल पर घरौंदा बनाया, वह डाल टूट कर बिखर गई,
नई उम्मीद और आशा के साथ, चिड़िया ने भरी उड़ान,
नई डाल पर जाकर उसने, नवजीवन पाया।

सृष्टि आर्य
कक्षा - 4 'ब'

माँ की ममता

घुटनों से रेंगते रेंगते,
कब पैरों पर खड़ी हुई|
तेरी ममता की छांव में,
जाने कब में बड़ी हुई|
काला टीका दूध मलाई,
आज भी सब कुछ वैसा है|
मैं ही मैं हूं हर जगह,
मां प्यार ये तेरा कैसा है?
सीधी सादी, भोलीभाली -
मैं ही सबसे अच्छी हूं
कितनी भी हो जाऊं बड़ी
मां मैं आज भी तेरी बच्ची हूं

अदिति
कक्षा – 8 'अ'

कविता

स्वच्छ, स्वच्छ, भारत को स्वच्छ बनाना है।
इस जहाँ में हिंद को श्रेष्ठ कहलवाना है।
झगड़ते रहते हैं भाई, हिंदूमुस्लिम कहकर-,
हर भारतीय को हमें एक बनाना है।
आग में झोंक दो सारी कुरीतियों को,
गरीबी से देश का पीछा छुड़वाना है।
एकता का प्रतीक तो हमें कहा जाता है,
बस खुद को पवित्रता की देवी बनाना है।
सुबह उठकर जो बच्चे काम पर जा रहे हैं,
बस उनके हाथों में किताब को लाना है।
प्रगतिशील है देश हमारा, बस उसे अब विकसित बनाना है,
स्वच्छ भारत स्वस्थ भारत एक विश्व में अग्रणी भूमिका में लाना है।

नाजिया
कक्षा - 9 'ब' (अशोक सदन)

के.वि. मुजफ्फरनगर

कोशिश कर

कोशिश कर हल निकलेगा,
आज नहीं तो कल निकलेगा,
अर्जुन सा लक्ष्य रख निशाना लगा ,
मरुस्थल से भी फिर जल निकलेगा,
मेहनत कर पौधों को पानी दे,
बंजर में भी फिर फल निकलेगा,
ताकत जुटा हिम्मत को आग दे,
फौलाद का भी बल निकलेगा,
सीने में उम्मीदों को जिंदा रख,
समंदर से भी गंगाजल निकलेगा,
कोशिशें जारी रख,
कुछ कर गुजरने की,
जो कुछ थमा थमा है चल निकलेगा,
कोशिश कर हल निकलेगा,
आज नहीं तो कल निकलेगा।

सक्षम बलियान - 5 'ब'

चिड़िया

कभी पेड़ पर कूदती, कभी पानी में नाचती,
छोटी-छोटी लकड़ियों से यह, अपना घर बनाती,
ना ही किसी को सताती, ना ही किसी को रुलाती,
अपनी चहचाहट से सबको, सुबह उठाती,
फिर भी ना जाने क्यों, पिंजरे में कैद पाई जाती।

सारा खान - 5 'अ'

बचपन

वह बचपन भी कितना सुहाना था,
जिसका रोज एक नया फसाना था,
कभी पापा के कंधों का,
तो कभी मां के आंचल का सहारा था,
कभी बेफिक्रे मिट्टी के खेल का,
तो कभी पतंग ना पकड़ पाने का पछतावा था,
कभी बिन आंसू रोने का तो,
कभी बात मनवाने का बहाना था,
सच कहूं तो वह दिन ही हसीन थे,
ना कुछ छुपाना, और दिल में जो आए बताना था।

अभिनव कुलश्रेष्ठ - 5 'अ'

कवि. मुज़फ्फरनगर

सब्जी और टॉफी

एक बार सब्जी और टॉफी में
जमकर छिड़ी लड़ाई।
सारी धरती काँप उठी।
थी भारी आफत आई।
टॉफी बोली मीठी मैं
बच्चों के दिल की रानी
मुझे देखते ही उनके
मुंह में आ जाता पानी।
शक्ल देखते ही तेरे
बच्चों के आंसू आते
खाते नहीं अगर तुझको।
तो मम्मी की डांट है खाते।
और कद्दू परवल टिंडा
पालक कच्चा केला
हटो हटो मेरे आगे से
वरना छेड़े झमेला।
यह सुनकर सब्जी भरी
क्रोध से जोर लगाए चिल्लाई।
मुंह की मीठी तुम जरूर हो
पर हो दिल की काली
चमक रहे इन रंगों में
बच्चे भगाने वाली।
यह सुनकर टॉफी बेचारी हुई
शर्म से पानी।
टॉफी जितना अकड़ रही थी
सब्जी ने सारी अकड़ उतारी।

श्रेष्ठ बहोत - 4 'अ'

मां

आप दुनिया में केवल एक ही हो। मेरी हर इच्छा पूरी करने वाली, मेरे दिल में हमेशा रहने वाली, मुझे बढ़िया खाना खिलाने वाली, हर समय मेरी चिंता करने वाली, मेरे दुखों को दूर करती है मेरी मां।

आप दुनिया में केवल एक ही हो। हर जगह मुझे सहयोग देने वाली, दिल से प्यार करने वाली, मुझे अपने प्यारे हाथो से खाना खिलाने वाली, मेरे साथ रात में अंधकार को दूर कर सुलाने वाली, अतः मेरे जीवन में खुशियां लाने वाली मेरी मां |

अथर्व शर्मा

कक्षा - 5 'अ'

के.वि. मुजफ्फरनगर

लौट चला चल उड़ते पंछी

लौट चला चल उड़ते पंछी, तेरा घोंसला पीछे छूट रहा
तू दिल जोड़ रहा उस बगीचे से, इस बगीचे से रिश्ता टूट रहा
मेरा देश है जन्नत का टुकड़ा, इससे सुंदर है जहां, कहाँ
क्यों प्रदेश में खुशियां ढूंढे तू, क्या रखा है यहां वहां
दिवाली के दीप से जगमग, है प्यार में डूबी
अलग है बोली देखो पगपग, यही तो इस माटी की खूबी
देश मेरा त्योंहारो का, देश मेरा उपहारों का
क्या हिंदू और क्या मुस्लिम, देश मेरा है सारों का
यह रंगों से भरी एक दुनिया है, फीका है इंद्रधनुष भी यार
ऐसे रंग कहां दुनिया में, फिर क्यों है पराये मुल्क से प्यार
रिश्तो का देश तो भारत है, पड़ोसी को भी करते हां
मां बाप जहां पराए हो, तू पाएगा क्या प्यार वहां
बर्फीली है नदिया , कहीं रेत की चादर लिपटी है
कहीं आसमां को छूती इमारत है, तो कहीं गांव की सोंधी मिट्टी है
भगत सिंह का शौर्य भी है, शेरशाह की गोली भी
मंगल को भी मुट्ठी में कर ले, ऐसी साइंटिस्ट की डोली भी
रवि कुमार दहिया की कुश्ती है, मीराबाई की फौलादी बाजू भी
तू क्या नापेगा इस मिट्टी का दम, है कोई ऐसी तराजू भी
चलो माना सूरत अभी और संवरनी है, भारत की कश्ती अभी और संवरनी है,
मां में कमी दिखे जिन आंखों को, मुझे हर वो आंख बदलनी है,
लोट चला चल ओ उड़ते पंछी, तेरा घोंसला पीछे छूट रहा,
तू दिल जोड़ रहा उस दुनिया से, इस बगीचे से रिश्ता टूट रहा |

हर्षित कुमार - 8'अ' (शिवाजी सदन)

पानी

मैं हूँ पानी न्यारा प्यारा, सबकी आँखों का मैं तारा।
मत बरबाद करो मुझको, वरना पछताओगे तुम |
मुझको तुम मत खोना, वरना तुम को पड़ेगा रोना।
मैं जाता ऊपर गर्मी से, फिर बारिश बनके मैं आता।
मैं हूँ सब के लिए खास , जीवन की एक मात्र आस।
पानी है अनमोल रतन, बचाने का करो पूरा जतन !
पानी स्रोत होते हैं सागर और नदी,
पानी खत्म न हो किसी भी सदी।

अनुराग गोस्वामी
कक्षा – 5 'अ' (अशोक सदन)

बारिश

बारिश आई छम छम,
लेकर छाता निकले हम,
पैर फिसला गिर गए हम,
चोट लगी और रोए हम,
बारिश आई छम छम,
लेकर साइकिल निकले हम,
साईकिल फिसली गिर गए हम,
चोट लगी और रोए हम,
बारिश आई छम छम,
बैठे हुए बोर हुए हम,
क्यों ना नाव बनाए हम ,
पानी में बहाए हम,
बारिश आई छम छम |

चारु - 4 'ब'

स्कूल की पत्रिका

आ गई है स्कूल की पत्रिका
छा गई है स्कूल की पत्रिका
बच्चों के दिल में समा गई पत्रिका
हर जगह वह तो छा गई पत्रिका
मेरा फोटो आया है
स्कूल की मैगजीन में छाया है
दिल में खुशियां लाया है
दोस्तों को भाया है
मेरे लेखन का सुधार होता
जीवन का सुधार होता
आ गई है स्कूल की पत्रिका
छा गई है स्कूल की पत्रिका

विशाखा
कक्षा - 4 'अ'

के.वि.मुजफ्फरनगर

के. वि. एस. स्थापना दिवस

जल संरक्षण दिवस

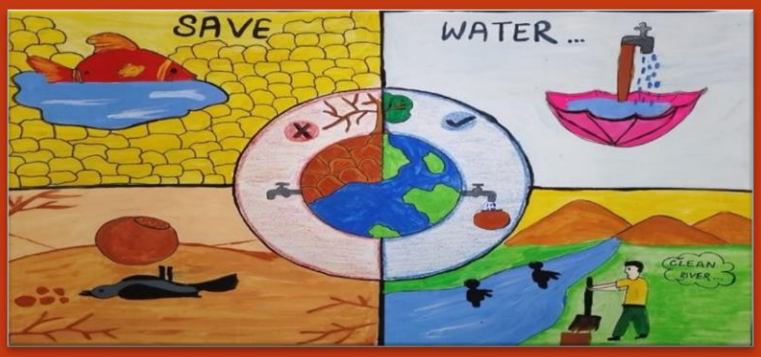

पृथ्वी दिवस

8 वाँ अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस

संस्कृत अनुभाग

मम् विद्यालयः

1-मम विद्यालयः नाम केंद्रीयविद्यालय : अस्ति।
2-मम विद्यालयः सुन्दरः अस्ति।
3-मम विद्यालये एकः पुस्तकालयः अस्ति।
4-मम विद्यालयस्य भवनम् विशालम् अस्ति।
5-मम विद्यालये एका वाटिका अस्ति।
6-विद्यालयस्य एकः मुख्यद्वारः अस्ति।
7-मम विद्यालये बहवः छात्राः सन्ति।
8-मम विद्यालये बालिकाः अपि पठन्ति।
9-सायकाले अत्र छात्राः क्रीडन्ति।
10-सर्वे बालकाः पंक्तिबद्ध भूत्वा तिष्ठन्ति।

स्नेहा
कक्षा – 8 ‘ब’

संस्कृतभाषायाः महत्त्वम्

संस्कृत भाषा अस्माकं देशस्य प्राचीनतमा भाषा अस्ति। प्राचीनकाले सर्वे एव भारतीयाः संस्कृतभाषाया एव व्यवहारं कुर्वन्ति स्म। कालान्तरे विविधाः प्रान्तीयाः भाषाः प्रचलिताः अभवन्, किन्तु संस्कृतस्य महत्त्वम् अद्यापि अक्षुण्णं वर्तते। सर्वे प्राचीनग्रन्थाः चत्वारो वेदाश्च संस्कृतभाषायामेव सन्ति। संस्कृतभाषा भारतराष्ट्रस्य एकतायाः आधारः अस्ति। संस्कृतभाषायाः यत्स्वरूपम् अद्य प्राप्यते, तदेव अद्यतः सहस्रवर्षपूर्वम् अपि आसीत्। संस्कृतभाषायाः स्वरूपं पूर्णरूपेण वैज्ञानिक अस्ति। अस्य व्याकरणं पूर्णतः तर्कसम्मतं सुनिश्चितं च अस्ति।
आचार्यदण्डिना सम्यगेवोक्तम् -
भाषासु मुख्या मधुरा दिव्या गीर्वाणभारती।"
अधुनाऽपि सङ्गणकस्य कृते संस्कृतभाषा अति उपयुक्ता अस्ति। संस्कृतभाषैव भारतस्य प्राणभूता भाषा अस्ति। राष्ट्रस्य ऐक्यं च साधयति। भारतीयगौरवस्य रक्षणाय एतस्याः प्रसारः सर्वैरेव कर्तव्यः। अतएव उच्चते- ‘संस्कृतिः संस्कृताश्रिता।'

आदित्य
कक्षा – 9 ‘अ’

मम प्रियः कविः

मम प्रियः कविः कालिदासः अस्ति । सः संस्कृतभाषायाः श्रेष्ठतमः कविः अस्ति । यादृशः रस प्रवाहः- कालिदासस्य काव्येषु विद्यते तादृशः अन्यत्र नास्ति । सः कविकुलशिरोमणिः अस्ति । कालिदासेन त्रीणिनाटकानि, (मालविकाग्निमित्रम्, विक्रमोर्वशीयम्, अभिज्ञानशाकुन्तलम् च रघुवंशम्) द्वे महाकाव्ये (च रचितानि । (मेघदूतम् ऋतुसंहारम् च) द्वे गीतिकाव्ये (कुमारसम्भवं च

कालिदासस्य लोकप्रियतायाः कारणं तस्य प्रसादगुणयुक्ता ललिता शैली अस्ति । कालिदासस्य प्रकृतिचित्रणं अतीवरम्यम् अस्ति चरित्रचित्रणे कालिदासः अतीव पटुः अस्ति ।
कालिदासः महाराजविक्रमादित्यस्य सभाकविः आसीत् । अनुमीयते यत्तस्य जन्मभूमिः उज्जयिनी आसीत् । मेघदूते उज्जयिन्याः भव्यं वर्णनं विद्यते । कालिदासस्य कृतिषु कृत्रिमतायाः अभावः अस्ति । कालिदासस्य उपमा प्रयोगः अपूर्वः । अतः साधूच्यते -'उपमा कालिदासस्य । '

रिज़ा
कक्षा – 10 'अ' (अशोका सदन)

अनुशासनम्

समाजे नियमानां पालनम् अनुशासनं भवति । जीवने अनुशासनस्य विशेषं महत्त्वं भवति । प्रत्येक पदे अनुशासनम् आवश्यकं भवति । अनुशासनं विना किमपि कार्यं सफलं न भवति। छात्रेभ्यः अनुशासनं परमावश्यकम् अस्ति । अनुशासितः सर्वेभ्यः प्रियः भवति । सामाजिकव्यवस्थाहेतु अनुशासनं अत्यन्तावश्यकम् अस्ति । यस्मिन् समाजे अनुशासनं न भवति तत्र सदैव कलहः भवति। शिक्षकस्य अनुशासने छात्राः निरन्तरं उन्नतिपथे गच्छन्ति । प्रकृतिः अपि ईश्वरस्य अनुशासने तिष्ठति । यः नरः पूर्णतया अनुशासन पालयति सः स्वजीवने सदा सफलः भवति । अतः अनुशासनस्य पालनं जीवने बहु आवश्यकं भवति।

सोहा
कक्षा – 10 'अ' (अशोका सदन)

सुभाषितानि

गङ्गाजलस्य पानेन किम्
व्रतानामनुष्ठानेन किम्
तीर्थानां यातेन किम्
यदि भावशुद्धिर्नास्ति।

गङ्गाजल का पान करने से क्या? व्रतों का पालन करने से क्या? तीर्थयात्रा करने से भी क्या प्रयोजन? यदि भावशुद्धि नहीं है। यह कवि का सीधे कल्पना-सीधे कर्मकाण्ड पर प्रहार है। संस्कृत सर्जना परम्परा कपोल-पर आश्रित नहीं है अपितु वर्तमान युग बोध का सूक्ष्मता से निरूपण करती है।

दिव्यांश सिंह
कक्षा – 8 'ब'

सुभाषितम

जाड्यं धियो हरति सिंचति वाचि सत्यं , मानोन्नतिं दिशति पापमपाकरोति | चेतः प्रसादयति दिक्षु तनोति कीर्तिं , सत्संगतिः कथय किं न करोति पुंसाम् ||

जाड्यं धियो हरति सिंचति वाचि सत्यं , मानोन्नतिं दिशति पापमपाकरोति | चेतः प्रसादयति दिक्षु तनोति कीर्तिं , सत्संगतिः कथय किं न करोति पुंसाम् || अर्थात् **अच्छे मित्रों का साथ बुद्धि की जड़ता को हर : लेता है,वाणी में सत्य का संचार करता है, मान और उन्नति को बढ़ाता है और पाप से मुक्त करता है | चित्त को प्रसन्न करता है और कीर्ति को सभी दिशाओं में फैलाता है(हमारी)|(आप ही कहें कि (सत्संगतिः मनुष्यों का कौन सा भला नहीं करती|**

कुँजल वर्मा

कक्षा – 7 'अ'

संस्कृतशिक्षिका

एषा मम संस्कृतशिक्षिका हर्षदा।
एषा सरलं सुगमं च पाठयति।
सा छात्रैसह स्नेहेन आचरति :
तस्याः उच्चारणम् अतीव स्पष्टा |
सा श्लोकान् सम्यक् गायति।
सा पाठने आधुनिकसाधनानाम् उपयोगं करोति।-
वयं संस्कृतवर्गे न केवलं पठाम अपि तु भाषाक्रीडया :
।:आनन्दम् अनुभवाम
तेन अस्माकं संस्कृतरुचिवर्धते :
सा छात्रान् ग्रन्थालयं नयति।
विविधानि पुस्तकानि दर्शयति।
वयं तानि पुस्तकानि आनन्देन पठाम।:
मम संस्कृतशिक्षिकायाव्यक्तिमत्त्वं प्रसन्न :
तस्याः अध्यापनेन वयं सन्तुष्टाभवाम। :

अक्षय पाल

कक्षा - 7 'अ'

वृक्षानां महत्त्वम्

वृक्षाः जनान् स्वच्छम् वायुः ददाति। वृक्षाः पर्णैः पुष्पैः च शोभन्ते। अस्य वर्णः हरितः भवन्ति । वृक्षः कार्बोनडाई ऑक्साइड ग्राहयति ओक्सीजेन च वमति। वृक्षाः प्राणरहिताः जडपादार्थाः न। तेषामपि प्राणोऽस्ति। तेऽपि रोगग्रस्ता भवन्ति। वृक्षाः पादैः पातालं स्पृश्यन्ति। वृक्षाः पदैः जलं पिबन्ति। (मूलैः) वृक्षे काकः, चातकः शयेन च तिष्ठन्ति। वृक्षेषु भ्रमराः भ्रमन्ति मधुपानं च कुर्वन्ति। वानरः वृक्षेषु कुर्दन्ति। वृक्षेण फलानि विकसन्ति। जनाः वृक्षाणां फलानि भक्षयन्ति। वृक्षाः परोपकाराय फलन्ति। उक्तमच-

परोपकाराय फलन्ति वृक्षाः,परोपकाराय वहन्ति नद्यः।
परोपकाराय दुहन्ति गावः,परोपकारार्थमिदं सर्वम्।।

धैर्य शर्मा – 6 'अ'

सदाचारः

(आचारस्य महत्त्वम् / :परमो धर्म :आचार)

अस्माकं भारतीया संस्कृति द्विविधः :प्रधाना अस्ति। आचार-आचार : भवति दुराचारः सदाचारः च।- सताम् आचारः सदाचारः इत्युच्यते। सज्जनाः विद्वांसो च यथा आचरन्ति तथैव आचरणं सदाचारो भवति। सज्जनाः स्वकीयानि इन्द्रियाणि वशे कृत्वा सर्वैः सह शिष्टतापूर्वकं व्यवहारं कुर्वन्ति। ते सत्यं वदन्ति, मातुः पितुः गुरुजनानां वृद्धानां ज्येष्ठानां च आदरं कुर्वन्ति तेषाम् आज्ञां पालयन्ति, सत्कर्मणि प्रवृत्ता भवन्ति।

जनस्य समाजस्य राष्ट्रस्य च उन्नत्यै सदाचारस्य महती आवश्यकता वर्तते। सदाचारस्याभ्यासो बाल्यकालादेव भवति। सदाचारेण नरः धार्मिकः, शिष्टो, विनीतो, बुद्धिमान् च भवति। संसारे सदाचारस्यैव महत्त्वं दृश्यते। ये सदाचारिणः भवन्ति, ते एव सर्वत्र आदरं लभन्ते यस्मिन् देशे जनाः सदाचारिणो भवन्ति तस्यैव सर्वतः उन्नतिर्भवति। अतएव महर्षिभिः इत्युच्यते। "परमो धर्मः :आचार " सदाचारी जनः परदारेषु मातृवत् परधनेषु लोष्ठवत्, सर्वभूतेषु च आत्मवत् पश्यति। सदाचारीजनस्य शीलम् एव परमं भूषणम् अस्ति।

विनय कुमार
टी.जी.टी. संस्कृत

सरस्वती देवी

सरस्वती विद्याः देवी अस्ति।
एषा श्वेतपद्मासने विराजते ।
एषा शरीरे शुभ्रं वस्त्रं धारयति।
अस्याः कण्ठे रत्नहारः विलसन्ति।
एषायाः मस्तके किरीतं शोभते।
किरीटं रत्नखचितं वर्तते।
एषा वामेन हस्तेन विनयः दण्डं धारयति।
सरस्वत्याः वाहनं हंसः इति कथ्यते।
हंसस्य धवलः वर्णोऽपि चरित्रस्य उज्ज्वलतां बोधयति।
अस्याः हस्ते पुस्तकं ज्ञानस्य प्रतीकमस्ति।

श्रेयांस
कक्षा – 6 'अ'

" वृक्षाणां महत्त्वम् "

वृक्षाः जनाः स्वच्छम् वायुः ददाति। वृक्षाः पर्णैः पुष्पैः च शोभन्ते। अस्य वर्णः हरितः भवति। वृक्षः सीओ2 ग्राहयति ओ2 च वमति। वृक्षाः प्राणरहिताः जडपादार्थाः न। तेषामपि प्राणोऽस्ति। तेऽपि रोगग्रस्ता भवन्ति। वृक्षाः पादैः पातालं स्पृश्यन्ति। वृक्षाः पदैःजलं पिबन्ति। वृक्षे काकः (मूलैः), चातकः शयेन च तिष्ठन्ति। वृक्षेषु भ्रमराः भ्रमन्ति मधुपानं च कुर्वन्ति। वानरः वृक्षेषु कुर्दन्ति । वृक्षेण फलानि विकसन्ति। जनाः वृक्षाणां फलानि भक्षयन्ति। वृक्षाः परोपकाराय फलन्ति। उक्तमच-

परोपकाराय फलन्ति वृक्षाः,परोपकाराय वहन्ति नद्यः।
परोपकाराय दुहन्ति गावः,परोपकारार्थमिदं सर्वम्॥

धैर्य शर्मा – 6 'अ'

एहि एहि वीर रे

एहि एहि वीर रे
वीरतां विधेहि रे
पदं हदं निधेहि रे
भारतस्य रक्षणाय
जीवनं प्रदेहि रे॥

त्वं हि मार्गदर्शकः
त्वं हि देशरक्षकः
त्वं हि शत्रुनाशकः
कालनाग तक्षकः॥

साहसी सदा भवेः
वीरतां सदा भजेः
भारतीयसंस्कृतिं-
मानसे सदा धरेः॥

पदं पदं मिलच्चलेत्
सोत्साहं मनो भवेत्
भारतस्य गौरवाय
सर्वदा जयो भवेत॥

हार्दिक
कक्षा – 7 'अ'

वन्देमातरम

भारतम् अस्माकं देशःभारतभूमिः अस्माकं मातृभूमिः । यथा उक्तम् माता भूमि :, अहं पृथिव्याः इति जन्मभूमिः अस्माकं जननी अस्ति । यतो हि अस्याः एव क्रोडे पुत्रः क्रीडित्वा वयम् स्वशैशवम् अतिक्रम्य यौवनम् प्राप्नाः । इयं मातृभूमिः स्वर्गात् अपि श्रेष्ठा । यत्र वयं सुखेन वसामः विविधान् भोगान् च अनुभवामः ।

अस्माकं मातृभूमिः सुफला, सुजला, शस्यश्यामला अस्ति । सागरः अस्याः चरणौ प्रक्षालयति हिमालयः अस्याः शुभं किरीटम्, विन्ध्याद्रिः च अस्याः कटिः अस्ति । विविधाः नद्यः अमृततुल्येन जलेन इमां सिञ्चति सूर्यः प्रतिदिनं प्रातः इमां प्रणमति खगाश्च कलश्वनैः इमां स्तुवन्ति ।

अतएव देवाः अपि अत्र जन्म ग्रहीतुम उत्सुकाः तिष्ठन्ति गायन्ति च गायन्ति देवाः किल गीतकानि, धन्यास्तु ये भारतभागे-भूमि-।

स्वर्गापवर्गास्पद ,मार्ग भूते -भवन्ति भूयः पुरुषाः सुरत्वात् ॥

अभिज्ञान देशवाल
कक्षा – 9 'अ'

प्रकृतिः

प्रकृतिः माता सर्वेषाम् ,
बहुनाम् अपि फलानाम्।
बहुनाम् अस्ति वृक्षाणाम्,
पुष्पानाम् चापि मातेयम्।।
भ्रमराणाम् , पशूनाम् ,
पक्षिनाम् च मातास्ति।
जनेभ्यः जीवनं सदा,
ददाति प्रकृतिर्माता।।
अस्ति सा तु मनोहारी,
मानवानाम् अपि मातास्ति।
प्रकृतिः माता सर्वेषाम्,
नमोस्तु ते मात्रे सर्वषाम्।।

दिव्यांशी शर्मा
कक्षा – 7 'अ'

कालः

कालः अतीव मूल्यवान् अस्ति। अस्माभिः तस्य नाशः न कर्तव्यः यतः एकदा कालः गतः चेत पुनः न आगमिष्यति। अस्माभिः समयस्य मूल्यं कर्तव्यम्, तस्य सदुपयोगः करणीयः। वयं बहुवारं समयस्य दुरुपयोगं कुर्मः। यथा मोबाईले क्रीडां क्रीडन् -, अधिकं टीव्यष्ट्वा .वी., बकवासं वदन्, शून्यं उपविष्टम् इत्यादयः।

संस्कृते अपि उक्तं यत्इति। "समयेव करोति बलाबलम्" -

अर्थात् कालमात्रं पुरुषं दुर्बलं बलवान् च करोति। ए .जे .पी. अब्दुलकलामः भारतस्य कृते उत्तमाः क्षेपणास्त्राः निर्माय भारतस्य क्षेपणास्त्रपुरुषः इति प्रसिद्धः अभवत्। डॉ भीमराव अम्बेडकरः भारतस्य . संविधानस्य स्वप्नं साकारं कृतवान्। ते सर्वे स्वसमयस्य सदुपयोगेन प्रसिद्धाः अभवन्। ये कालस्य सदुपयोगं कुर्वन्ति, ते एव स्वजीवनस्य सदुपयोगं कुर्वन्ति।

अहं किमपि कर्तुं शक्नोमि, भविष्यं च उज्ज्वलं भवितुम् अर्हति आम्, ते समाजे सम्मानं प्राप्नुवन्ति। ये च कालस्य दुरुपयोगं कुर्वन्ति, ते स्वजीवने किमपि कर्तुं न शक्नुवन्ति तथा च तेषां भविष्यं निराशाजनकं भवति, तेषां समाजे सम्मानः न प्राप्यते।

कबीर दासः सुलिखितः अस्ति –

का"लि करे सो आज कर, आज करे सो अब।"
क्षणान्तरे प्रलयं भविष्यति, कदा बहुरी करिष्यति।"

अनुपम गोस्वामी
कक्षा – 7 'अ' (अशोक सदन)

शिक्षक दिवस

विभाजन विभीषिका

युवा दिवस

ENGLISH SECTION

Environment

Environment can be defined as a sum total of all the living and non-living elements and their effects that influence human life. While all living or biotic elements are animals, plants, forests, fisheries, and birds, non-living or biotic elements include water, land, sunlight, rocks, and air.

The production and consumption activities generate waste. This occurs mostly in the form of garbage. The environment helps in getting rid of the garbage. The environment enhances the quality of life. Human beings enjoy the beauty of nature that includes rivers, mountains, deserts, etc. These add to the quality of life.

Environment plays an important role in healthy living and the existence of life on planet earth. Earth is a home for different living species and we all are dependent on the environment for food, air, water, and other needs. Therefore, it is important for every individual to save and protect our environment.

Name: Anupam Goswami

Class: 7A

Bird

With the great fearless wings,
Above the sky from thousands of kings.
The pleasant musical voice,
That takes us away from loud noise.
Do you know who is this,
Yes, it is like nature's kiss.
The tree is it home,
Berries are its food.
Rains is its shower,
And its soothing voice, makes our mood
It is the bird which flies around the sky
To do this for the first time,
She kept try-try-try.
After so many tries
She gains the liberty to reach high

Name -Dhairya Sharma

Class- 6A

The cow and the lion

Five cows lived in a little forest.
They ate fresh grass in a large green meadow.
They were kind friend.
They decided to do everything together, so the lions could not attack them for food.
One day, the five cows fought and catch one started to eat grass in different place.
The lions decided to seize the opportunity and killed them one by one.

Rajshree

Class - 7 'A'

Women Power

When I were born,
A woman was there to hold me,
No one else, only my mother,
When I grew as a child,
A woman was there to care for me,
No one else, only my Sister,
When I went to school,
A woman were there to help me learn,
No one else, only my Teacher,
When I became depressed and lost,
A woman was there to offer me a shoulder,
No one else, only my wife,
When my life became tough,
A woman was there to melt me,
No one else, only my Motherland.

Divyanshi Sharma
Class - 7 'A'

I Love my India

Jammu Kashmir is for looking.
Madras for cooking.
Kerala is for dancing.
Mysore is for natural chills.
Ahmadabad is for mills.
Nagaland is for hills.
Mumbai is for foodie.
Delhi is for duty.
Bengal is for writing.
Punjab is for fighting.
Bihar is for mines.
Himachal is for devine. .
Gujarat is for wealth.
M.P is for health.
Andhra is for learning.
Maharashtra is for dreaming.
Haryana is for oil.
Assam is for soil.
Arunachal is for furniture of cane.
U.P is for sugarcane

Divyanshi Sharma
Class - 7 'A'

के.वि. मुजफ्फरनगर

Come with Me

The morning sun came with a new message
A message of hope for the new age
Our thoughts and ideas are like birds
Let it out of the cage
Let our thoughts fly higher and higher
Let us work harder, let us aim higher
Let our success touch the sky
Let us prosper as we fly higher and higher.
Oh, man! Wake up from your sleep
You have a promise to keep.
Did you forget how you were once?
You were under the threat of guns.
Remember you were once suppressed
You had suffered and you were oppressed
Those bad days are over
Fortune is now in our favour.
We must live as good citizens with zest
We must do our best
Let us now step into the future
With peace and harmony let's co-exist with nature
The wave swirled in the sea
Jubilantly, Jubilantly,
The sun, the moon, and the stars, the sky
Everyone is lively and ready
Let us now live in peace and harmony
Oh!! Man, won't you come with me,
Come with me, come with me
And share the love.

Aditi kashyap
Class - 10 'A'

Your Best

If you always try your best
Then you'll never have to wonder
About what you could have done
If you'd summoned all your thunder
And if your best
Was not as good
As you hoped it would be,
You still could say,
"I gave today
All that I had in me".

Pari
Class - 10 'B'

All but Blind

All but blind
In his chambered hole
Gropes far warms
The four - clawed Mole

All but blind
In the evening sky
The hooded Bat
Twirls Softly by

All but blind
In the burning day
The Barn Owl blunders
On her way.

And blind as are
These three to me.
So, blind to someone
I must be.

Hemant

Class - 6 'A'

के.वि. मुज़फ्फ़रनगर

What is Life?

Life is journey
not just a race.
There are many problems
We have to face.

Sometimes people tease you
With their bikes and cars.
But with your hard work
Show them what you are.

Life is God's blessing
Not a of course curse.
Don't matter if you not have
Much money in your purse.

Earn little but don't beg
It 40% support you
But 60% pull your leg.

Riya Chauhan

Class - 7 'A'

Unforgettable Moments

I love to visit at different places. As they are amazing; and give us opportunity to learn a lot. This year in our summer holidays, I insisted my dad to take us for an outing. My dad promised me to do so.

On the day of our trip, we all wake up early in the morning. Our luggage was packed before a day. We started our journey after breakfast. The time it took to reach Delhi from our car was two and half hours. We ate our food, drank cold drink and also slept for some time meanwhile.

When we reached Delhi, we first visited to Qutub Minar. Qutub Minar is the tallest tower of India. Its height is 72metres. I was very happy because I love to visit the historical places.

After a visit to Qutub Minar, we went to India Gate. Lights,that were on the India Gate were shining brightly and the evening time, was the perfect combination. We enjoyed near India Gate around half an hour.

Next day we visited to Red Fort (Lal Qila). It is located in a very huge area. It seemed difficult to cover up in a day. In Red Fort, there were some shops. I purchased a beautiful dupatta. We visited many museums which were inside it. After clicking many photographs, we came out. We saw Jama Masjid also. It was very beautiful. Then we came back home.

Next day, my dad gave me a surprise that we were going to Agra. I was very much excited. Trip to Agra was around of 6 hours by car. So we started it early in the morning just after breakfast. We had booked the hotel in advance. We first reached hotel and kept our luggage. We decided to visit Taj Mahal first. Taj Mahal is a very beautiful and the perfect architecture monument. We clicked many photos and visited all around Taj Mahal we came back to Muzaffarnagar. This trip of ours was very exciting and awesome. It was the best of my life. I wish I may such surprise trip again.

Haika Tanveer

Class - 7 'A'

ARTICLE - A BUTTERFLY

The way a butterfly spreads its wings and flies merrily without any problem, we wish to live our life like a butterfly without any fear.

Butterflies appear to dance as they flitter among the flowers. They remind us not to take things so seriously within our lives. They awaken a sense of lightness and joy. They remind us to get up and move. Create your life yourself, achieve your goals and never back down because you have the whole world to back down. Never depend on anyone else, make your dreams come true, live freely like a butterfly.

Butterflies bring colour and joy with them. The colours of the butterfly should be examined for significance and to help you understand its role within your life. Look at how much or little joy is in your life.

"Lighten up". "Look for change".

Make changes when the opportunities present themselves. The butterfly will teach you that growth and change do not have to be traumatic. Change can occur as gently and as joyful as one wishes.

Be a successful person, achieve your goals, do your best, and then live freely on this earth.

"You Can Do It".

"If you want to fly, give up everything that weighs you down".

Ruqayyah Khan

Class - 10 A

Today I Wrote this Poem

Today, I wrote this poem, but I'm not sure if it's good.
It doesn't have the things my teacher says a poem should have.
It doesn't share the feelings I have deep inside of me.
It hasn't any metaphors and not one simile.
It's missing any narrative and alliteration too.
It isn't an acrostic, diamante, or haiku.
There is nothing that is personified.
It does not have a plot.
I am pretty sure that rhyming is the only thing it's got.

Diwanshi
Class - 10 'B'

Books

Books are, by far, the most lasting products of human effect. Temples crumble into ruin, pictures and statues decay, but Books survive. Time does not destroy the great thoughts, which are as fresh today as when they first passed thought their author's minds years ago. What was then through and said still speaks to us vividly as even from the printed pages. Nothing in literature can long survive but what is really good Books introduce us into the best society? They bring us into the presence of the greatest minds that have ever lived, we move in their company and their experiences become ours. Without Books, no fresh idols are possible and without fresh ideas, no cultured society is possible. No wonder that the world keeps its Books with great care.

Anshu
Class - 9 'A'

DIGNITY

You get dignity,
When you stop thinking wrong.
When you do what you learn right.
You can live dignified,
When you live a lifestyle that,
Matches your vision.
You can get dignity,
When you renounce the"ego of individuality",
And rejoice ups and downs of life.
There us dignity,
When you have good thoughts,
In your heart and mind.

Aditya
Class - 9 'A'

The benefit of musical instruments on health

"Research shows that making music can lower blood pressure, decrease heart rate, reduce stress, and lessen anxiety and depression. There is also increasing evidence that immunological response, which enable us to fight viruses", Hanser said.

Anshu

Class - 9 'A'

The Buddha's teaching: The Parable of the poisoned arrow

The primary purpose of the Buddha's teaching is to erase sadness "dukh" from people's life and intends to capture all of life's disappointments, dissatisfaction, and unfulfilled happiness. One of the Buddha's teachings can be illustrated by the story of the parable of the poisoned arrows recorded in the culamalukya sutta. A man named malunkyaputta came to Buddha with a list of questions that he thinks that Buddha has left in his teachings. He asked Buddha many questions like -

Is the cosmos infinite?

Is the afterlife real? If yes then what is there?

He asked these questions to the Buddha and threatens that if these questions were not answered he would not practice the religion. Buddha responds to malunkyaputta suppose.

You malunkyaputta, a man was wounded by an arrow which was smeared with poison and your family bought a surgeon to treat him The man would say: ' I will not let the surgeon operate on me until I know if the man who shot me was tall, small, dark or brown or had golden hair, whether the man lived in a village or in a town....until I know what materials were used to make the bow and the arrow.

Buddha continued in this manner, and before the man got his answer he died of poisoning long before he got answers to those questions. "So, too, Malunkyaputta," he continues:

If anyone comes to me and says he will not follow Buddha until these questions are answered he, too, will die.

The parable of the poisoned arrow makes clear that Buddha's teachings were focused on eliminating suffering. Abstract questions like how the cosmos is made and what is an afterlife are too small than the pain which is happening right now, right at this moment.

Abstract questions like these are not bad they should be questioned when we have no suffering and pain and when we are at a higher level of consciousness these questions should be questioned.

Aditya

Class - 9 'A'

Water wastage

Water wastage is a pressing global issue that demands urgent attention. As the world's population continues to grow, and climate change amplifies its effects, the preservation and responsible use of water have become paramount. Unfortunately, wasteful practices and mismanagement of this precious resource have led to severe consequences on both a local and global scale.

One of the primary contributors to water wastage is leaky infrastructure. Old and poorly maintained pipes and water distribution systems result in significant losses of water before it even reaches consumers. According to studies, in some regions, up to 30% of treated water is lost due to leaks, putting additional strain on already scarce water supplies.

Furthermore, excessive water usage in agriculture is another major culprit of water wastage. In many regions, traditional irrigation techniques are still prevalent, leading to inefficient water use and runoff. Modernizing irrigation systems and adopting water-saving agricultural practices can substantially reduce water wastage and increase crop yields, ultimately benefiting both farmers and the environment.

Another concerning aspect of water wastage is the casual disregard for water conservation in our daily lives. Leaving taps running while brushing teeth, taking unnecessarily long showers, and overwatering lawns are all examples of small habits that, when multiplied across millions of individuals, amount to a significant loss of water.

Water scarcity has far-reaching consequences on ecosystems, agriculture, and human communities. It leads to desertification, dwindling water tables, and potential conflicts over water resources. Moreover, it disproportionately affects vulnerable communities, exacerbating poverty and limiting access to basic necessities like clean drinking water and sanitation.

Addressing water wastage requires a multi-faceted approach. Governments and water management authorities must invest in infrastructure upgrades and promote sustainable water practices. Public awareness campaigns can play a crucial role in encouraging individuals to adopt water-saving habits in their daily routines. Technologies like water-efficient appliances and rainwater harvesting systems can also make a substantial difference.

In conclusion, water wastage is a critical issue that demands immediate action. By prioritizing water conservation, implementing sustainable practices, and raising awareness, we can safeguard this invaluable resource for current and future generations, fostering a more sustainable and resilient world.

Kavish Baliyan
Class - 9 'A'

Timmy and Nibbles: An Unlikely Friendship (story)

In a quaint town, nestled amidst rolling hills and blooming meadows, lived a school boy named Timmy. Timmy was a cheerful, freckle-faced lad with a heart full of curiosity and a passion for adventure. One day, while wandering through the woods near his home, he stumbled upon a tiny, injured creature – a baby squirrel. With a tender heart, Timmy decided to take the little creature home and care for it.

Timmy named his new companion "Nibbles" due to its fondness for nibbling on acorns and other treats. As days turned into weeks, Timmy and Nibbles became inseparable. Timmy would sneak a small portion of his lunch every day to share with Nibbles, and in return, Nibbles would entertain him with acrobatics and playful antics.

The school days were always filled with excitement for Timmy. He would wake up early in the morning, finish his chores diligently, and head to school with Nibbles perched safely in his jacket pocket. At school, he would share stories of his woodland adventures with his classmates, who would listen in awe. Timmy's teacher, Mrs. Jenkins, was understanding and allowed Nibbles to accompany him during lessons, as long as he didn't disrupt the class.

One fine day, an announcement was made that the school would be hosting a pet show. Students were encouraged to showcase their beloved pets, and Timmy was thrilled at the prospect of introducing Nibbles to the entire school. He spent days preparing for the event, grooming Nibbles' soft fur and teaching him a few tricks to impress the audience.

The day of the pet show arrived, and the schoolyard was filled with an array of animals – from dogs and cats to birds and even a few bunnies. But the sight of Timmy and Nibbles stole everyone's hearts. Nibbles showcased his acrobatic skills, running across a makeshift balance beam and jumping through hoops made of twigs. The crowd cheered, and Timmy's heart swelled with pride. Though Nibbles was small, he had the spirit of a champion.

To everyone's surprise, the judges awarded Timmy and Nibbles the first prize for their heartwarming performance and the strong bond they shared. The joy on Timmy's face was immeasurable, and he knew that Nibbles was more than just a pet; he was a friend, a companion, and a source of endless joy.

As the years passed, Timmy and Nibbles continued to be the best of friends. They explored the world together, sharing laughter and tears, and creating cherished memories that would last a lifetime. Their story spread across the town, inspiring others to embrace the unique and special connections that can be formed between humans and animals.

And so, in the little town surrounded by hills and meadows, the tale of a school boy and his pet squirrel became a timeless legend, reminding everyone that the most unexpected friendships could be the most beautiful ones of all.

Kavish Baliyan

Class - 9 'A'

School Days: A Journey of Learning and Growth

School days are an integral part of everyone's life, representing a period of learning, personal growth, and cherished memories. Whether they bring feelings of excitement or nostalgia, these formative years shape individuals in profound ways. The significance of school days extends far beyond academics; they shape character, relationships, and prepare students for the challenges of the world.

At the start of this journey, kindergarten beckons with colorful classrooms and friendly teachers. Here, children take their first steps towards academic knowledge and social interactions. From learning the alphabet to making new friends, these early school days lay the foundation for future learning experiences.

As students progress through primary school, they discover the wonders of various subjects like mathematics, science, literature, and history. Teachers play a vital role in nurturing curiosity and igniting the passion for learning. Beyond textbooks, students engage in sports, arts, and extracurricular activities, developing a well-rounded personality.

Transitioning to high school marks a significant milestone. Adolescents face the challenges of increased academic rigor, changing friendships, and discovering their identities. The school days now become a blend of academic pursuits, social experiences, and personal growth. It is during these years that individuals begin to realize their strengths, interests, and future aspirations.

School days are also a time of friendships and camaraderie. Lifelong bonds are formed through shared experiences, laughter, and the occasional mischief. Friendships offer support during challenging times and create memories that last a lifetime. These social connections contribute to emotional well-being and are an essential part of the school experience.

Amidst the academic and social whirlwind, school days offer valuable life lessons. Facing successes and failures, students learn resilience, perseverance, and the importance of hard work. They learn to manage time, set goals, and overcome obstacles, all of which serve them well in adulthood.

Extracurricular activities enrich school days and provide an opportunity for students to explore their passions. Whether it's participating in sports, joining the school band, engaging in community service, or becoming part of a debate team, these activities nurture talents, foster teamwork, and boost self-confidence.

As school days come to a close, students embark on the next chapter of their lives. They carry with them the knowledge gained, memories cherished, and the skills acquired. Each student's unique journey through school days shapes them into the individuals they become, influencing their careers, relationships, and perspectives on life.

In conclusion, school days represent a crucial chapter in every person's life, fostering learning, growth, and unforgettable experiences. They serve as the stepping-stones towards a brighter future, providing the knowledge and tools necessary to navigate the **complexities** of the world. As we move forward, we must always remember and appreciate the significance of these formative years that have shaped us into who we are today.

Rudra Sharma

Class - 9 'A'

What about Failures? The Pressure of JEE and NEET Exams

As the sun rises on the academic journey of countless Indian students, so does the burden of excelling in the prestigious Joint Entrance Examination (JEE) and National Eligibility cum Entrance Test (NEET). These competitive exams have become the gateway to secure a seat in the country's most esteemed engineering and medical institutions. However, the overwhelming pressure to succeed has given rise to serious concerns about the mental health and well-being of these aspiring young minds.

The preparation for JEE and NEET exams begins early, with students investing years of hard work and dedication. The intense competition coupled with high expectations from family and society creates an enormous weight on their shoulders. The fear of failure looms large, and the thought of not achieving the desired result can be paralyzing.

The grueling study schedules, sleepless nights, and limited leisure time take a toll on their physical and emotional health. The constant comparisons with peers, and the social stigma attached to failure, adds to the already mounting stress. Consequently, mental health issues such as anxiety and depression are on the rise among JEE and NEET aspirants.

Moreover, the highly competitive nature of these exams can often lead to a sense of disillusionment among students who are unable to meet their expectations. Many bright minds, due to a single setback, lose faith in their abilities and succumb to the pressures of society. It is crucial to recognize that failure is a part of life's journey and should not be viewed as an end in itself.

Parents, educators, and policymakers play a pivotal role in alleviating the stress faced by these young talents. Instead of solely focusing on the outcome, the emphasis should be on promoting a healthy learning environment, encouraging individual growth, and nurturing a positive mindset towards challenges.

Institutes organizing these exams can also contribute to reducing the pressure. By conducting counseling sessions, providing mental health support, and implementing reforms in the examination pattern, they can create a more nurturing and empathetic ecosystem for students.

Furthermore, incorporating life skills, emotional intelligence, and stress management in the school curriculum can equip students with the tools to handle pressure constructively. Encouraging extracurricular activities can also provide much-needed breaks and avenues for holistic development.

In conclusion, the pressure of JEE and NEET exams is undeniably immense, and it is vital to address the mental health and well-being of these young aspirants. Failure should not be seen as a dead-end, but rather as a stepping stone to success. Emphasizing personal growth, cultivating a supportive environment, and incorporating a balanced approach to education can help alleviate the burden and pave the way for a brighter future for our nation's youth.

Dipanshu
Class - 9 'A'

India and It's Lost Heritage

India, with its rich cultural history and diverse traditions, has always been celebrated as a land of ancient wisdom and profound heritage. However, the passage of time has seen the gradual erosion and loss of many aspects of India's invaluable cultural and historical legacy. This erosion can be attributed to various factors, including colonization, globalization, urbanization, and neglect.

One of the significant contributors to India's lost heritage is colonization. The prolonged period of foreign rule by the British and other European powers resulted in the plundering of India's treasures. Priceless artifacts, sculptures, manuscripts, and historical documents were looted or destroyed, robbing the country of its tangible heritage.

Furthermore, the neglect of India's heritage by its own people has contributed to its decline. As the younger generation becomes disconnected from their roots, traditional art forms, languages, and customs are being forgotten. This lack of awareness and appreciation for India's heritage has resulted in the fading of traditional practices and knowledge systems.

However, steps are being taken to preserve and revive India's lost heritage. Efforts are being made to restore and protect ancient monuments, promote traditional art forms, and document indigenous knowledge systems. Organizations and individuals are working together to raise awareness and instill a sense of pride in India's rich cultural heritage.

Dipanshu

Class - 9 'A'

Nature's Beauty

Nature's beauty, a raining sky,
Drops of water falling, floating by.
Soft and gentle, they create a tune,
Aesthetic vibes in every monsoon.

With lofi beats, the atmosphere's set,
Creating a cozy, mellow outlet.
As raindrops tap, they hum a song,
Colors blending, where they belong.

Clouds paint the sky, shades of gray,
Rain's rhythm, a soothing display.
And amidst it all, a rainbow appears,
A stunning sight that
Brings us cheers.

So let the raindrops gently fall,
With lofi vibes, enchanting us all.
The rainbow's beauty, a magical sight,
Nature's symphony, pure delight.

Dipanshu

Class - 9 'A'

A Failed Attempt

PART - 1

At that time, I was preparing for a maths olympiad for which I was studying 4 hours a day extra. I was tired and needed a break. Suddenly my Grandpa came and asked me "Would you like to go to Raghunathpur with us?".

These things happen when God is keenly watching you. It was Sunday so I said "Yes, why not".

Raghunathpur is a small village, 70 km from where I live. I'm obviously not interested in that village. My reason for going there was my cousins.

I sat in the car and stepped on the ground after roughly 2 hours.

PART - 2

In the evening I and my two cousins decided to prank every one and spread awareness also about saving water.

We planned to write a fake short notice from The Prime Minister, warning the people to save water and then making copies of it via printer.

Soon as we got to know that the printer shop is in another village which is 5 km away. We had to write all the notices manually.

Finally, we went to prank people. Most of them believed it and shocked me. Not because they believed it, but because they were happy. When I asked them the reason for their happiness they said "Now the rich people won't waste water and switch the water motor off on time".

We all realised that these people didn't have much water to waste.

Wow, what a time waste.

Dipanshu
Class - 9 'A'

School

Pencils, glue, paper and books,
My backpack is filled to the top
I grab my lunch and gym shoes
And make my way to the bus stop
I get to school and walk in
Walls are decorated it's cool
I find my desk with my name
I am ready for back to school.

Ramsha
Class - 4 'A'

FAMILIES

Families are people,
Who care about you,
My family is special,
Your family is too.

Mothers and fathers,
And sisters and brothers,
Grand ma and grand pa,
And so many other.

One family is big,
While another is small,
Some families have children,
And some none at all.

When we are together
Or far far apart
The people I love
Fill the map of heart

MUGESH G.M.
Class - 4 'B'

Trees

We receive oxygen from tree,
They make environment polution free.
Trees give us oxygen, And give to birds place to live.

Trees gives our medicine and wood,
to make furniture.

Trees bring rain,
So do plant trees again and again.

Trees remove pollution,
And make environment neat and clean.

Don't cut trees,
Plant more and more trees.

Trees are important living things,
input more trees and output more oxygen.

Trees gives us many things,
so be should there thanks.

Anurag Goswami
Class - 5 'A'

TABLES IN VEDIC MATHS

Step 1: Convert the given normal number, for which table is to be written to win.

column number. Remember bigger digits (greater then 5) to be converted into smaller digits in vinculum conversion.

Conversion of normal number to vinculum number. Nikhilam and Ekadhikena purvena sutras are to be used

- Identify the digits, which are greater than 5 in the given number.
- Apply Nikhilam sutra on those digits.

[Subtract the last digit from 10 and subtract other digits from 9]

Ex: Apply given sutras to 857.

Apply Nikhilam sutra for 857

7 is the last digit, subtract from 10 (10-7=3), we should show the bar for the last digit.

5 & 8 are the next digits, subtract from 9 (9-5=4 & 9-8=1).

- Apply Ekadhikena purvena sutra for first digit. Ex: 4 it becomes 5

Step 2: Digits of the converted number to be considered as operators to write the tables.

Ex: 857 converted to vinculum it become 143 then it is the operator.

Step 3: Perform the addition or subtraction with respect the operators on the given number in the respective places.

Step 4: If you get two digits answer while doing addition or subtraction in any of the level, then take the carry or borrow.

Write the table for number 19.

Vinculum number of 19=21 & Apply Nikhilam & Ekadhikena sutras to 19

(Subtract 9 from 10 it becomes 1 & Ekadhikena of 1 is 2).

Atharva Sharma

Class - 5 'A'

TREE

I am a tree
With a dark green crown
And the strong trunk
Above the ground
I give you food
I give you fruits
I give you medicine
I give you wood
I need some sunlight
And some fresh air.

Priya

Class - 5 'A'

Riddles

1. I have cities but no houses, forests but no trees, water but no fish. What am I?
2. Two fathers and two sons are going in a car but yet there are 3 people in the car. How?
3. What starts with a 't' ends with a 't' and is filled with '1'?
4. Eva's mother has 3 children - March and April what is the name of her first child?
5. What has to be broken before it is used?
6. What has a head and tail but no body?
7. It is so fragile that it is broken if you say its name. What is it?
8. Which building has most stories?
9. What tastes better than its smell?
10. You own this thing but other people use this more than you what is it?

Answers :

1) I am a map

2) there is a grandfather, father and a son

3) teapot

4) it's Eva

5) an egg

6) a coin

7) silence

8) library

9) your tongue

10) your name

Vishakha

Class - 4 'A'

के.वि.मुजफ्फरनगर

अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस

परीक्षा पर चर्चा

जनजातिय गौरव दिवस

स्वतंत्रता दिवस

KENDRIYA VIDYALAYA MUZAFFARNAGAR

HAPPY
INDEPENDENCE
DAY

जय
हिन्द

देशभक्ति
NAME - RIDHIMA SAINI
CLASS - 8 A
ROLL NO - 29
HOUSE - RAMAN (YELLOW)

भारतीय भाषा उत्सव

संविधान दिवस

राष्ट्रीय एकता दिवस

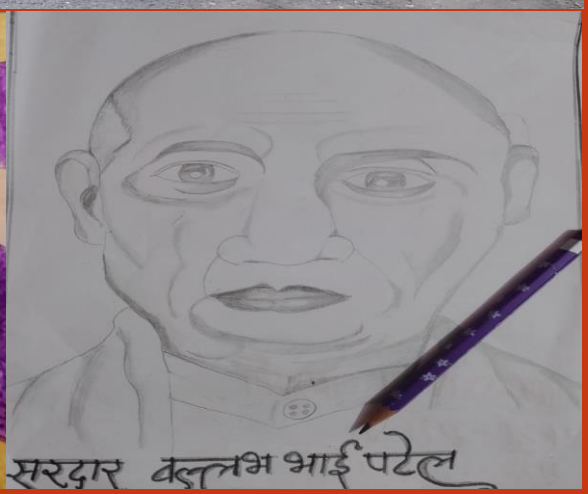

हिन्दी पखवाड़ा

केन्द्रीय विद्यालय
मुजफ्फरनगर
हिन्दी पखवाड़ा
सितम्बर 14 से 28 तक
हिन्दी है जन-जन की भाषा,
हिन्दी है हम सब की भाषा ।

केन्द्रीय विद्यालय
मुजफ्फरनगर

हिन्दी पखवाड़ा

हिन्दी पखवाड़ा
सितम्बर 14 से 28 तक
हिन्दी है जन-जन की भाषा,
हिन्दी है हम सब की भाषा ।

गणतंत्र दिवस

स्वच्छता पखवाड़ा

केन्द्रीय विद्यालय, मुजफ्फरनगर
स्वच्छता पखवाड़ा आयोजन
1 सितम्बर से 15 सितम्बर तक
जहाँ स्वच्छता होती है वहाँ ईश्वर का वास होता है।
स्वच्छ भारत स्वस्थ भारत

CLEANLINESS IS NEXT GODLINESS
PLEASE

केन्द्रीय विद्यालय
मुजफ्फरनगर
KENDRIYA VIDYALAYA MUZAFFARNAGAR

रंगोली प्रतियोगिता

सामुदायिक भोजन

आर्ट कॉर्नर

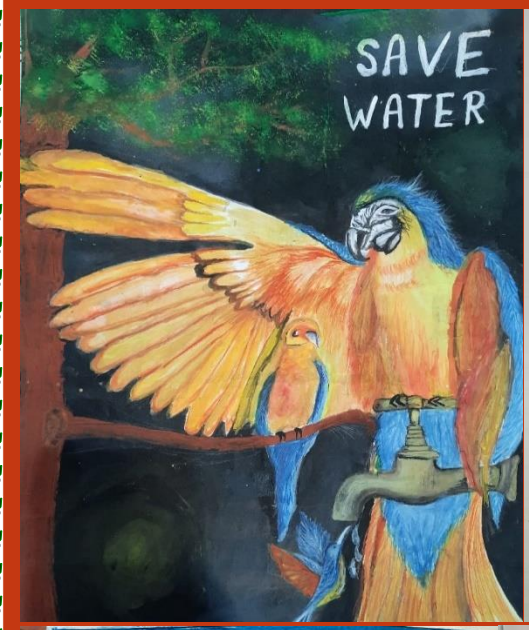
SAVE
WATER

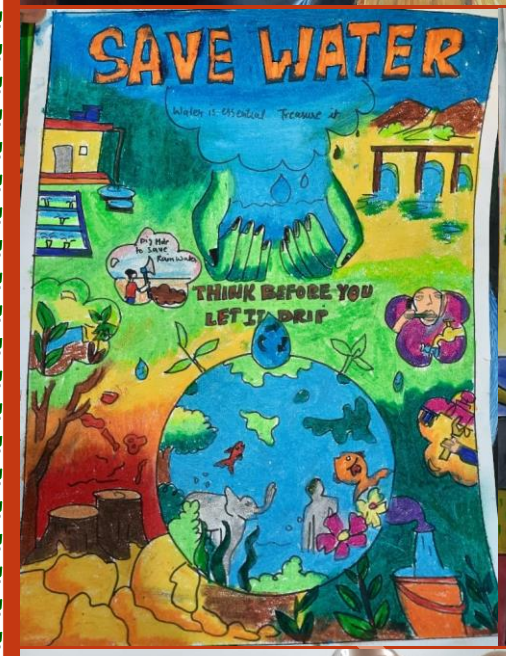
SAVE WATER
Water is essential Treasure it
THINK BEFORE YOU

LIFE DEPENDS ON
WATER AND WATER
CONSERVATION DEPENDS ON
YOU
Save Water
It's Not Just
A Drop In
The Bucket It's
A life
Water is a
Gift From
The Creator
PROTECT IT!
RESPECT IT!
STOP
WATER
POLLUTION

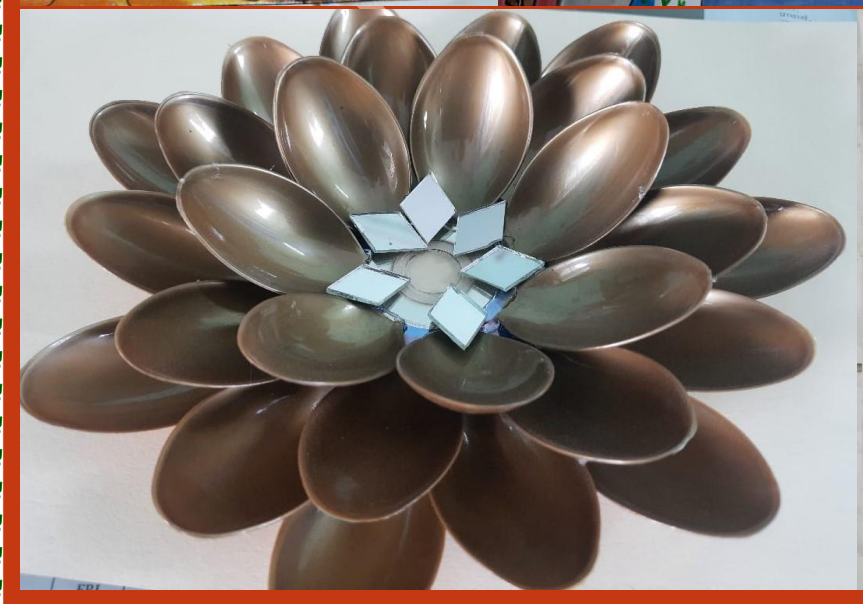

Indian
Armed Force
(CDS)
Bipin Rawat

सी. एम. पी. कॉर्नर

कंप्यूटर कॉर्नर

आर्टिफीसियल इंटेलिजेंस (AI)

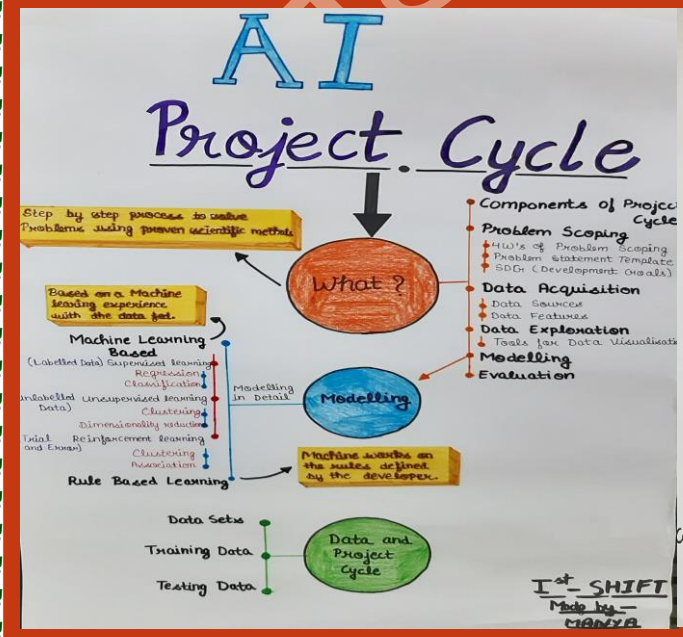

पुस्तकालय कॉर्नर

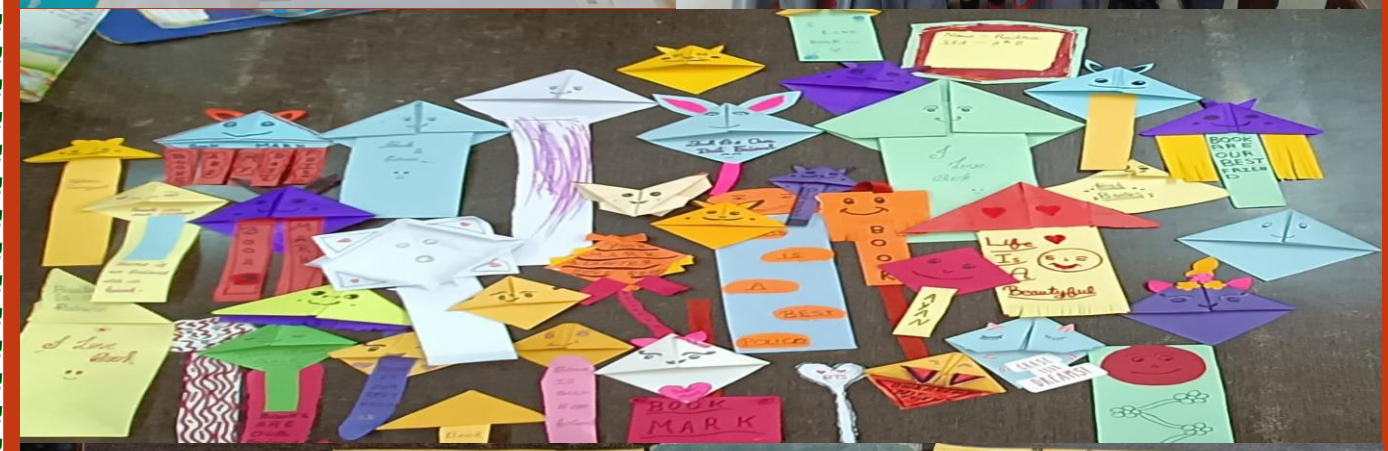
BOOK MARK

बड़े घर की बेटी
बैल की कथा
प्रेमचंद
पंच परमेश्वर
शतरंज के खिलाड़ी
रंगभूमि
प्रेमचंद
रोचक जातक कथाएँ

स्काउट एण्ड गाइड

भारत स्काऊट-गाइड
केन्द्रीय विद्यालय,मु. नगर

भारत स्काऊट-गाइड
केन्द्रीय विद्यालय,मु. नगर

भारत स्काउट गाइड
केन्द्रीय विद्यालय संगठन
आगरा – संभाग
द्वितीय सोपान जाँच शिविर
दिनांकः– 13-12-2022 से 14-12-2022 तक

खेलकूद गतिविधियां

एन.सी.सी.

FP53+49V, Circular Rd, near Diet, Irrigation Colony, Santosh Vihar, Civil Lines South, Muzaffarnagar, Uttar Pradesh 251001, India
Latitude 29.457707° Longitude 77.703242°
LOCAL 09:21:26 GMT 03:51:26 SUNDAY 10.23.2022 ALTITUDE 195 METER

..... इतिश्री .....